

WWW.NAYIGOONJ.COM
GOONJNAYI@GMAIL.COM

अगस्त 2023

**शोध साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट
मासिक पत्रिका
नई गूँज**



- साक्षात्कार- डॉ प्रदीप कुमार
(कैरियर काउंसलर)
- लेख - शिक्षा का सफर
- लेख - आजादी का अमृत काल
- कविता - संघर्ष तो अभी बाकी है
- निबंध- इच्छा - मृत्यु

9785837924

NAYI GOONJ – SHODH , SAHITYA EVAM SANSKRITI (MONTHLY) MAGAZINE

शोध , साहित्य और संस्कृति की मासिक वैब पत्रिका

नयी गूज-----.



वर्ष 2023

अंक 8

WEBSITE- nayigoonj.com

Email address goonjnayi@gmail.com -

WHATSAPP NO. 91-9785837924



संपादक मंडल

प्रमुख संरक्षक

प्रो. देव माथुर

vishvavishvaaynamah.webs1008@gmail.com

मुख्य संपादक

रीमा माहेश्वरी

shuddhi108.webs@gmail.com

संपादक

शिवा 'स्वयं'

sarvavidhyamagazines@gmail.com

शाखा प्रमुख

ब्रजेश कुमार

aryabrijeshsahu24@gmail.com

वरिष्ठ परामर्श दाता तथा पब्लिक ऑफिसर

सीमा धमेजा

डायरेक्टर

प्रज्ञा इंस्टीट्यूट जयपुर

Praggyainstitutejpr@gmail.com

9351177710

परामर्शदाता

कमल जयंथ

jayanth1kamalnaath@gmail.com

सम्पादकीय

सफलता का कोई पर्याय नहीं

शिवा स्वयं

आपके कर्म और मेहनत ही आपके सफलता की मूल कुंजी होते हैं। आपकी मेहनत आपके लक्ष्यों की प्राप्ति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और आपके कर्म आपके जीवन में सकारात्मक परिणामों को लाते हैं।

कर्म और मेहनत के बीच गहरा संबंध होता है। कर्म विशेष गतिविधियों या क्रियाओं का परिणाम होता है जो हम अपने जीवन में करते हैं, जबकि मेहनत के माध्यम से हम अपने कर्म को पूरा करते हैं। मेहनत के बिना कर्म सफलता की प्राप्ति में कठिनाइयों का कारण बन सकता है, क्योंकि बिना मेहनत और प्रयास के कर्म सामर्थ्यवान नहीं होते।

लक्ष्य बनाने और कर्म में गहरा संबंध होता है। लक्ष्य एक आवश्यक पहलु है जो आपको दिशा में मार्गदर्शन करता है और आपके कर्म की दिशा तय करने में मदद करता है। जब आप एक लक्ष्य का निर्धारण करते हैं, तो आप उसकी प्राप्ति के लिए मेहनत, प्रयास और समर्पण करते हैं, जो कर्म के रूप में प्रकट होते हैं। लक्ष्य बनाने से आपके कर्म में संयम और

आदर्शों की दिशा मिलती है, जिससे आप अपने उद्देश्यों की प्राप्ति में सफल हो सकते हैं।

अपने कर्मों को सही और सकारात्मक बनाने के लिए कुछ सुझावः

स्वयं मूल्यांकन करें: आपको अपनी कार्यवाही को समीक्षा करने का समय समय पर निकालना चाहिए, ताकि आप देख सकें कि कहाँ सुधार की आवश्यकता है और कैसे आप उन्हें सकारात्मक बना सकते हैं।

सकारात्मक सोच बनाएं: आपकी सोच आपके कार्यों को प्रभावित करती है, इसलिए सकारात्मक और उत्साहित सोच बनाए रखने का प्रयास करें।

संयम और समर्पण: सही कार्यों के लिए संयम और समर्पण बनाए रखें। कभी-कभी परिश्रम के फल को प्राप्त करने में समय लग सकता है, लेकिन आपकी मेहनत और समर्पण हमेशा सकारात्मक परिणाम देते हैं।

नियमित प्रैक्टिस और सुधार: जैसे-जैसे आप नियमित रूप से अपने कार्यों पर प्रैक्टिस करते हैं, आपकी कौशल में सुधार होता जाएगा और आपकी कार्यवाही सख्तियों से मुक्त होगी।

सकारात्मक प्रेरणा: सकारात्मक प्रेरणादायक विचारों, किताबों, लोगों या संसाधनों को पढ़कर अपने कर्मों को प्रेरित करें।

अपने लक्ष्यों को स्पष्ट करें: आपके पास स्पष्ट और संवेदनशील लक्ष्य होना चाहिए, जिससे आप अपने कर्मों को संवेदनशीलता से निर्दिष्ट कर सकें।

संयम और संतुलन: आपको संयमित और संतुलित रहने का प्रयास करना चाहिए। अत्यधिक काम की तनावपूर्णता और अपर्याप्त काम की लापरवाही दोनों हानिकारक हो सकते हैं।

याद रखें कि सकारात्मक और सही कर्म आपके जीवन को सफलता और आनंद से भर देते हैं।

सबसे महत्वपूर्ण यह है कि ईश्वर के प्रति आस्था और विश्वास हमारे कर्मों को सहायक बना सकते हैं। यह आपको सही दिशा में मार्गदर्शन करते हैं, सकारात्मक मानसिकता प्रदान करते हैं, और आपकी मेहनत को सफलता की ओर ले जाते हैं। आस्था और विश्वास से हम अपने कर्मों को महत्वपूर्ण और उद्देश्यबद्ध बना सकते हैं, जिससे हम सफलता की प्राप्ति में सहायता प्राप्त कर सकते हैं।

जब भी आप अपने भीतर निराशा महसूस करें उस समय काम करना , एक अच्छा तरीका हो सकता है क्योंकि कार्य में

लगने से मन में सकारात्मकता आ सकती है और आपकी मनोबल को बढ़ावा मिल सकता है। कार्य में व्यस्त रहने से आपका मन निराशा के विचारों से दूर हो सकता है और आपका ध्यान आपके उद्देश्यों पर स्थिर रह सकता है।

आप के मनोबल को बढ़ावा देने के लिए इसके अलावा भी कुछ तरीके हो सकते हैं:

सकारात्मक विचार: निराशा की जगह, सकारात्मक विचारों को प्राथमिकता दें। सकारात्मक और उत्साहभरे विचार आपकी मनोबल को उच्च कर सकते हैं।

साक्षात्कार के साथ काम करें: कार्यों को साक्षात्कार के रूप में देखें, जैसे कि आप उन्हें एक अवसर की तरह देख रहे हों। यह आपके उत्साह को बढ़ा सकता है।

सामर्थ्यों पर ध्यान केंद्रित करें: आपके पास क्या क्षमताएँ हैं और क्या काम किया जा सकता है, इस पर विचार करें। आप

अपने सामर्थ्यों के साथ काम करके स्वयं को प्रेरित कर सकते हैं।

प्राथमिकताओं को स्थापित करें: आपके पास क्या महत्वपूर्ण कार्य हैं, उन्हें पहचानें और उन्हें पूरा करने के लिए निर्धारित समय दें।

स्वास्थ्य का ध्यान रखें: आदर्श शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखना महत्वपूर्ण है। प्राथमिकताएं स्थापित करने के लिए सही स्वास्थ्य अवस्था में रहना आवश्यक होता है।

प्रेरणादायक स्रोतों का उपयोग करें: अच्छे बुक्स, उद्धरण, सफलता की कहानियाँ, आदि से प्रेरणा लें और उन्हें अपने काम में शामिल करें।

छोटे-छोटे कार्यों का समय निकालें: बड़े लक्ष्यों को छोटे कदमों में विभाजित करें और उन्हें पूरा करने के लिए नियमित रूप से समय निकालें।

याद रखें कि निराशा के विचारों से निपटने के लिए सबसे महत्वपूर्ण चीज़ है कि आप सकारात्मक और स्थिर रहें और अपने कार्यों में विश्वास करें।

निश्चय और प्रतिबद्धता के साथ कठिनाइयों का सामना करने में सफलता प्राप्त की जा सकती है। कठिनाइयों के सामने भाग्य या अवस्थाएं केवल एक हिस्सा होती हैं, और आपका सही निर्णय और मेहनत ही है , जो आपको उन्हें पार करने में मदद करते हैं ।

दृढ़ निश्चय से कठिन काम करने में आपकी मेहनत, समर्पण, और आत्मविश्वास महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जब आप पूरी श्रद्धा के साथ अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ते हैं, तो कठिनाइयाँ आपके सामने आने वाली मंजिल के रास्ते में केवल एक रुकावट के समान होती हैं, और आपकी लगन और विश्वास से समाप्त होती जाती है।

आप मेहनत और निरंतर प्रयासों से, कठिनाइयों को पार करके हर असंभव को, संभव बना सकते हैं और आपकी सफलता की कहानी का मजबूती से निर्माण कर सकते हैं।

आप जीवन में इन कुछ बिंदुओं को अपनी सफलता का आधार बना सकते हैं जैसे _

निर्णयक्षमता: कठिनाइयों के समय में सही निर्णय लेना महत्वपूर्ण है। विचारपूर्ण तरीके से सोचकर और विकल्पों की परीक्षा करके आप योग्यता के हिसाब से सही निर्णय ले सकते हैं।

समस्याओं का समाधान: कठिनाइयों का समाधान खोजने में नैतिकता, विवेकशीलता और नवाचार की भावना महत्वपूर्ण होती है। समस्याओं को छोटे टुकड़ों में विभाजित करने का प्रयास करें और उन्हें एक-एक करके हल करने का प्रयास करें।

सहायता प्राप्त करें: आपके आस-पास के लोगों से मार्गदर्शन और सहायता प्राप्त करने का प्रयास करें। किसी विशेषज्ञ से सलाह लेना या उनकी अनुभव सुनना आपके समस्याओं का समाधान करने में मदद कर सकता है।

सहायता प्रदान करें: दूसरों की सहायता करके आपका स्वयं का आत्मविश्वास बढ़ सकता है। कभी-कभी, आपके अनुभव और ज्ञान से आपके साथियों को भी मदद मिल सकती है और आपको खुद को भी सहायता करने का मौका मिलेगा।

उत्साह और आत्मविश्वास: कठिनाइयों के बीच में आपका उत्साह और आत्मविश्वास महत्वपूर्ण होता है। यह आपको आगे बढ़ने की ऊर्जा प्रदान कर सकता है और आपकी मानसिकता को सकारात्मक दिशा में मोड़ सकता है।

नियमितता और संयम: कठिनाइयों के बावजूद नियमितता और संयम बनाए रखना महत्वपूर्ण है। इससे आप निरंतरता से काम करते रह सकते हैं और कठिनाइयों को पार करने में सहायता मिल सकती है।

कठिनाइयों के साथ संघर्ष करते समय, आपकी मानसिकता, सोचने की शैली और सक्रियता का तरीका महत्वपूर्ण होता है। इन सुझावों का पालन करते हुए, आप कठिन कामों के सामने उत्साह और सफलता के साथ खड़े हो सकते हैं।

अच्छे शब्द यदि जीवन में उतार सके तो ही उनका महत्त्व होता है अन्यथा हजारों किताबों के ढेर के बीच है ।



शुभेच्छा

नयी गूंज----- परिवार

परामर्शदाता-

प्रश्न है कि संस्कृति क्या है। यूं संस्कृति शब्द सम्+कृति से बना है, जिसका अर्थ है अच्छी कृति। अर्थात् संस्कृति वस्तुतः राष्ट्रीय अस्मिता के परिचायक उदात्त तत्वों का नाम है।

भारतीय सन्दर्भ में संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर समष्टिनिष्ठ होती है। संस्कृति की संरचना एक दिन में न होकर शताब्दियों की साधना का सुपरिणाम होता है। अतः संस्कृति सामासिक-सामाजिक निधि होती है। संस्कृति वैचारिक, मानसिक व भावनात्मक उपलब्धियों का समुच्चय होती है। इसमें धर्म, दर्शन, कला, संगीत आदि का समावेश होता है। इसी की अपरिहार्यता की ओर संकेत करते हुए भर्तृहरि ने लिखा है कि इसके बिना मनुष्य घास न खाने वाला पशु ही होता है-

“साहित्यसंगीतकला-विहीनः

साक्षात् पशुः पुच्छविषाणहीनः॥

मुख्य संपादक

उपनिषद् के शब्दों में कहें तो संस्कृति में जीवन के दो आयाम श्रेय व प्रेय का सामंजस्य होता है। इन्हीं आधार पर आध्यात्मिक, वैचारिक व मानसिक विकास होता है और इन्हीं के आधार पर जीवन-मूल्यों व संस्कारों का निर्धारण होता है और यही जीवन के समग्र उत्थान के सूचक होते हैं। शिक्षा-तंत्र में इन्हीं सांस्कृतिक मूल्यों का शिक्षण-प्रशिक्षण होता है। वर्तमान में शिक्षा-व्यवस्था संस्कृति की अपेक्षा सम्यता-निष्ठ अधिक है। तात्पर्य है कि वर्तमान शिक्षा विचार-प्रधान, चिन्तन-प्रधान व मूल्यप्रधान की अपेक्षा ज्ञानार्जन-प्रधान है। वस्तुतः इसी का परिणाम है कि सम्प्रति शिक्षा के द्वारा बौद्धिक स्तर में तो अभिवृद्धि हुई है किन्तु संवेदनात्मक या भावनात्मक स्तर घटा है।

संपादक -

हमारी शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों के स्थान पर पश्चिमी सभ्यता-मूलक तत्वों को उपादान के रूप में

WEBSITE- nayigoonj.com

Email address goonjnayi@gmail.com -

WHATSAPP NO. 91-9785837924



ग्रहण कर लिया गया है। तभी तो शिक्षा व समृद्धि के पाश्चात्य मानदण्डों को आधार मान लिया है जो संस्कृति-विरोधी हैं, जिनमें नैतिक व मानवीय मूल्यों का विशेष स्थान नहीं है। इसी का परिणाम है कि बुद्धिमान व गरीब नैतिक व्यक्ति सामाजिक दृष्टि से भी हांसिये पर ही रहता है और नैतिकता-विहीन, संवेदनहीन, भ्रष्टाचारी व अपराधी भी सम्पन्न, सभ्य, सम्मान्य व प्रतिष्ठित होता है। इसी संस्कृति-विहीन व्यवस्था के कारण शोषण-प्रधान पूंजीवादी व्यवस्था ही ग्राह्य हो गई है, जिसने रहन-सहन के स्तर को तो उठाया है, पर इस भोगवादी बाजारवादी व्यवस्था के कारण अर्थशास्त्र व तकनीकविज्ञान के सामने नैतिकता व मानवीयता गौण हो गई है। जबकि राधाकृष्णन व कोठारी आयोग की मान्यता थी कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिये जो सामाजिक, आर्थिक व सांस्कृतिक परिवर्तन का प्रभावी माध्यम बन सके। इस दृष्टि से भारतीय प्रकृति और संस्कृति के अनुरूप शिक्षा से ही मूल्यपरक उदात्त-गुणों का संप्रेषण और समय व्यक्तित्व का निर्माण सम्भव है। इसमें पुराने व नये का बिना विचार किये जो देश की अस्मिता व समाज के हितकर है, उसी को प्रमुखता देनी चाहिए।

शाखा प्रमुख की कलम से--

प्रिय पाठकों

संस्थान की पत्रिका नयी गूज के पहले अंक का लोकार्पण एक आंतरिक सुख की अनुभूति करा रहा है।

मुझे प्रसन्नता है कि शाखा प्रमुख के रूप में कार्यभार संभालने के बाद मुझे आप सभी से नयी गूज के इस अंक के माध्यम से रूबरू होने का मौका मिल रहा है।

हम कितना भी विकास कर लें किन्तु यदि समाज में संवेदना ही मर गई तो सब व्यर्थ है। इस संवेदनहीनता के चलते समाज में नकारात्मक ऊर्जा दिन प्रति-दिन बढ़ती जा रही है जो निन्दनीय भी है और विचारणीय भी। आवश्यकता है कि हम अविलम्ब इस दिशा में अपने प्रयास आरम्भ कर दें।

वस्तुतः अपने कर्मों से हम अपने भाग्य को बनाते और बिगाड़ते हैं। यदि गंभीरता से चिंतन-मनन किया जाय तो हमारा कार्य-व्यापार हमारे व्यक्तित्व के अनुसार ही आकार ग्रहण करता है और हमें अपने कर्म के आधार पर ही उसका फल प्राप्त होता है। कर्म सिर्फ शरीर की क्रियाओं से ही संपन्न नहीं होता अपितु मनुष्य के विचारों से एवं भावनाओं से भी कर्म संपन्न होता है। वस्तुतः जीवन-भरण के लिए ही किया गया कर्म ही कर्म नहीं है हम जो आचार-व्यवहार अपने माता-पिता बंधु मित्र और रिश्तेदार के साथ करते हैं वह भी कर्म की श्रेणी में आता है। मसलन हम अपने वातावरण सामाजिक व्यवस्था, पारिवारिक

समीकरणों आदि के प्रति जितना ही संवेदनशील होंगे हमारा व्यक्तित्व उतनी ही उच्चकोटि की श्रेणी में आयेगा।

आज के जटिल और अति संचारी जीवन-वृत्ति के सफल संचालन हेतु सभी का व्यक्तित्व उच्च आदर्शों पर आधारित हो ऐसी मेरी अभिलाषा है।

WEBSITE- nayigoonj.com

Email address goonjnayi@gmail.com -

WHATSAPP NO. 91-9785837924

यह ज़रूरी नहीं है कि हर कोई हर किसी कार्य में परिपूर्ण हो, परन्तु अपना दायित्व अपनी पूरी कोशिश से निभाना भी देश की सेवा करने के समान ही है। संपूर्ण कर्तव्यनिष्ठा से किया हुआ कार्य आपको अवश्य ही कार्य-समाप्ति की संतुष्टि देगा। कोई भी किया गया कार्य हमारी छाप उस पर अवश्य छोड़ देता है अतएव सदैव अपनी श्रेष्ठतम प्रतिभा से कार्य संपन्न करें। हर छोटी चर्या को और छोटे-से-छोटे से कार्य के हर अंग का आनंद लेकर बढ़ते रहना ही एक अच्छे व्यक्तित्व का उदाहरण है।

यह सर्वविदित तथ्य है कि नयी गूज एक उच्च स्तरीय पत्रिका है जिसमें विभिन्न विधाओं में उच्चस्तरीय लेखों का अनूठा संग्रह है

आप सभी पत्रिका का आनन्द लें एवं अपनी प्रतिक्रियायें ऑनलाइन या ऑफलाइन भेजें।

नयी गूज के माध्यम से हमारा आपका संवाद गतिशील रहेगा। आप सभी अपनी सुन्दर व श्रेष्ठ रचनाओं से नयी गूज को निरन्तर समृद्ध करते रहेंगे इसी विश्वास के साथ।

अंत में मैं सभी सम्पादक मण्डल के सदस्यों एवं रचनाकारों को नयी गूज पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन के लिए साधुवाद ज्ञापित करता हूँ करता हूँ।

आप सभी को हार्दिक बधाई के साथ बहुत-बहुत धन्यवाद!!

कालिदास ने काव्य के माध्यम से कहा है-

पुराणमित्येव न साधु सर्व
न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।
सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते
मूढः परप्रत्ययनेय बुद्धिः॥

अर्थात् पुरानी ही सभी चीजें श्रेष्ठ नहीं होती और न नया सब निन्दनीय होता है। इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति परीक्षा करके जो हितकर होता है उसी को ग्रहण करते हैं जबकि मूर्ख दूसरों का ही अन्धानुकरण करते हैं।

अस्तु, निर्विवाद रूप से यह सभी स्वीकार करते हैं कि राष्ट्र की रक्षा, का सकारात्मक पक्ष होता है।

प्रकाशन सामग्री भेजने का पता

ई-मेल: goonjnayi@gmail.com

नयी गूज इंटरनेट पर उपलब्ध है। www.nayigoonj.com पर क्लिक करें।

नयी गूज में प्रकाशित लेखादि पर प्रकाशक का कॉपीराइट है

शुल्क दर 40/-

वार्षिक: 400/-

WEBSITE- nayigoonj.com

Email address goonjnayi@gmail.com -

WHATSAPP NO. 91-9785837924

त्रैवार्षिक: उपर्युक्त शुल्क-दर का अग्रिम भुगतान 1200/-

को -----द्वारा किया जाना श्रेयस्कर है।

नियम निर्देश

- 1 रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।
- 2 लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आँकड़ों से संबंधित आरेख स्पष्ट होने चाहिए। प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।
- 3 अनूदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान संपादक मंडल प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते हैं।
- 4 प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की ही होगी।

नई गूँज नियमावली

रचनाएं goonjnayi@gmail.com ई-मेल पते पर भेजी जा सकती हैं। रचनाएं भेजने के लिए नई गूँज के साथ लॉग-इन करें, यह वांछित है। आप हमारे whatsapp no. 9785837924 पर भी अपनी रचनाएँ भेज सकते हैं

प्रिय साथियों,

नई गूँज हेतु आपके सहयोग के लिए आपका हार्दिक धन्यवाद। आशा है कि ये संबंध आगे भी प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेंगे। आगामी अंक हेतु आप सबके सक्रिय सहयोग की पुनः आकांक्षा है। आप सभी से एक महत्वपूर्ण अनुरोध है कि आप अपने शोध प्रपत्र निम्न प्रारूप के तहत ही प्रस्तुत करें जिससे कि हमें तकनीकी जटिलताओं का सामना न करना पड़े -

1. प्रकाशन हेतु आपकी रचना के मौलिक होने का स्वतः सत्यापन रचना प्रेषित करते समय "मौलिकता प्रमाण पत्र" पर हस्ताक्षर करना अनिवार्य है। इसके बिना रचना पर विचार करना संभव नहीं होगा

2. रचना कहीं पर भी पूर्व में प्रकाशित नहीं होनी चाहिए !

WEBSITE- nayigoonj.com

Email address goonjnayi@gmail.com -

WHATSAPP NO. 91-9785837924

3. आपकी रचनाएँ एम.एस. ऑफिस में टाइप होना चाहिए
4. फॉन्ट - कृतिदेव 10, मंगल यूनिकोड
5. रचनाओं के साथ अपना पूर्ण पता, मोबाइल नंबर, ईमेल तथा पासपोर्ट साइज की फोटो लगाना अपेक्षित है !
6. आप लेख, कविता, कहानी, किसी भी विधा में रचनाएँ भेज सकते हैं !

नई गूँज रचनाओं के प्रेषण सम्बंधित नियम व शर्तें :

एक से अधिक रचनायें एक ही वर्ड-डॉक्यूमेंट में भेजें।

रचनायें अपने पंजीकृत पेज पर दिए गए लिंक इस्तेमाल कर प्रेषित करें।

यदि आप हिंदी में टाइप करना नहीं जानते हैं, आप गूगल द्वारा उपलब्ध करवायी गयी लिप्यान्तरण सेवा का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए [Google इनपुट उपकरण](#) लिंक पर जाएँ।

स-आभार

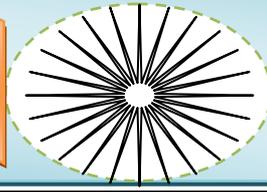
संपादक मंडल

Note:- प्रत्येक रचना लेखक की स्वयं मौलिक तथा लिखित है! इसमें लेखक के स्वयं के विचार हैं तथा कोई त्रुटि होने पर लेखक स्वयं जिम्मेदार होगा!

अनुक्रमाणिका -अगस्त 2023

क्रम संख्या	विवरणिका	लेखक	पृष्ठ संख्या
लेख -			
1	आजादी का अमृत काल	डॉ. घनश्याम बादल	1 - 3
2	फूलों का विचित्र संसार	बृजेश कुमार	4 - 7
3	दूर दृष्टि	डॉ. आर. बी. भण्डारकर	8 - 9
4	धर्म -राजनीति अंतर्संबंध	सलिल सरोज	10 - 14
5	शिक्षा का सफर	डा. शिवा धमेजा	15 - 18
कविता			
6	संघर्ष तो अभी बाकी है	डॉ. उमेश प्रताप वत्स	19 - 20
7	किससे हम फरियाद करें	सर्वजीत सिंह	21
8	मुझे मुस्कुराना पडा	टिकेश्वर सिन्हा	22
9	जिंदगी ए बाजार	डॉ. कंचन जैन 'स्वर्णा'	23 - 24
कहानी			
10	संगति का असर	प्रिया देवांगन	25 - 26
11	चिंगारी जिसने फूक डाले घर	डॉ. घनश्याम बादल	27 - 32

12	नया अध्याय गजल	टिकेश्वर सिन्हा	33 – 35
13	खा के ठोकर गिरे भले दिल में भले तूफान वो समझ कर मुझको न	महेश शर्मा	36 37 38
14	आलेख – भारत को नई क्रांति की दिशा देने वाले क्रांतिकारी निबंध	डॉ उमेश प्रताप वत्स	39 – 43
15	इच्छा -मृत्यु		44 - 48
16	साक्षात्कार- डॉ.प्रदीप कुमार (कैरियर काउंसलर)		49 – 54



स्वाधीनता दिवस विशेष:

आजादी का अमृत काल

कोई पी रहा अमृत, किसी को हलाहल मिला !

डॉ० घनश्याम बादल

आजादी की 77 वी वर्षगांठ, सारा देश आज़ादी के अमृत रस से सराबोर, अमृत महोत्सव में मस्त है। देश के कई हिस्सों में नग्न परेड करती औरतें लिव इन के जहर से बिखरते परिवार, संसद में चील कौओं की तरह लड़ते पक्ष और विपक्ष के दृश्यों के बीच यह सेलिब्रेशन देश के जीवट का परिचायक कहा जा सकता है। हालांकि ऐसा नहीं है कि सब कुछ अस्त व्यस्त या काला पीला ही है मनोहारी रंग भी यहां मौजूद है बस देखने की ज़रूरत है आर्थिक, सामरिक एवं वैश्विक राजनीति की दृष्टि से आज देश सुदृढ़ अवस्था में है और किसी भी चुनौती का सामना करने में सक्षम है।

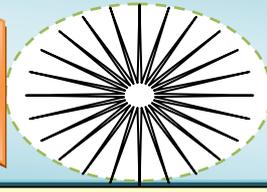
हम हिम्मत वाले पर...

हमने काल और परिस्थितियों की आंखों में आंखें डाल कर हिम्मत के साथ कहना और लड़ना, अड़ना और जीतना कुछ तो सीख लिया है और कुछ सीखा रहे हैं। यह सच है कि आज के भारत को कोई भी आसानी से दबा, झुका या हरा नहीं सकता है अब चाहे वह कोई देश हो या परिस्थिति। पर यदि हम अभी से खुद को अविजेय मान बैठे तो यह भी रेत में गर्दन घुसेड़े शूतुरमुर्ग जैसी मूर्खता होगी। बहुत से देश हमसे अभी बहुत आगे हैं नए - नए क्षितिज अभी टूटने और नापने शेष हैं

एक दिन का हासिल नहीं सब:

आज जिस मुकाम पर हम हैं वह एक दिन में हासिल नहीं हो गया है इसके पीछे 1947 के बाद के पूरे कालखंड को तो श्रेय है ही आज़ादी से पहले के उन जुझारू स्वाधीनता सेनानियों को भी इसका श्रेय देना होगा जिन्होंने आजादी के लिए अत्याचार सहें, देश के लिए बलिदान किए और आने वाली पीढ़ियों में देश के लिए कुछ करने का जज़्बा भरा बेशक आजादी के अमृत महोत्सव काल में सबसे पहला नमन उन नींव की ईंटों को किया जाना चाहिए जिनके खून - पसीने पर आज देश की बुलंद इमारत मजबूती के साथ खड़ी हुई है।

किसने बनाया यह भारत महान ?:



हो सकता है राजनीति के एक पक्ष को इस पर ऐतराज हो। यह बहुत स्वाभाविक भी है क्योंकि राजनीति का चरित्र ही ऐसा है कि वह हर फायदे की बात का श्रेय लेने में सदा आगे रहती है। आज़ाद भारत की संप्रभुता, अखंडता, सुदृढ़ता, एकता एवं आर्थिक तथा रक्षा क्षेत्र की मजबूती, कृषि में बंपर पैदावार का श्रेय लेने की होड़ अगर राजनीति में है तो यह कोई अचंभित करने वाली बात नहीं है, न ही इस बात पर हैरानी होनी चाहिए कि राजनीति का एक वर्ग विशेष सारी कमियों के लिए दूसरे राजनीतिक दलों या विचारधाराओं को दोषी ठहरा रहा है। अब यह अलग बात है कि भारत को भारत किसी एक दल विचारधारा या नेता ने नहीं बनाया अपितु यह 140 करोड़ भारतीयों के खून पसीने का परिणाम है।

यदि देश ने तरक्की की है तो इसका ठोस आधार हैं यहां के देशभक्त नागरिक, रक्षा के लिए सदैव तत्पर रहने वाले सैनिक, खेतों में पसीना बहाने वाले कृषक और मजदूर, अर्थव्यवस्था को रीढ़ की हड्डी की तरह मजबूत करने वाले व्यापारी, इस सारी उन्नति एवं प्रगति के सहभागी हैं। दलित, दलित, मजदूर, शोषित, सर्वहारा वर्ग, हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई और दूसरे धर्म भी सबने किसी न किसी तरह से इस देश की बगिया को सींचा है तभी भारत हरे-भरे बड़े उद्यान में परिवर्तित हो पाया है।

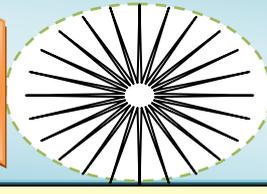
कौन पी रहा अमृत ?

जब - जब भी समस्याओं के बीच समुद्र मंथन हुआ है तब -तब किसी को अमृत तो किसी को हलाहल मिला है। आजाद भारत के अमृत मंथन में देश के हर वर्ग ने पर्वत योगदान किया है और इस मंथन से असंख्य रत्न निकले हैं। अमृत भी निकला है और विष भी। मगर जैसा समुद्र मंथन के समय हुआ था वैसा ही आजादी के अमृत मंथन में भी हुआ है। अमृत देश का चतुर व शक्तिशाली वर्ग पी गया सर्वहारा के हिस्से में केवल हलाहल आया और यही आजाद भारत की सबसे बड़ी कमजोरी बन गया है।

किसके हिस्से आया हलाहल ?

गरीबी, भूख, अशिक्षा, मजबूरी, बेरोजगारी और यहां तक कि जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति भी न हो पाने जैसे हलाहल यदि किसी के हिस्से में आए हैं तो वह सर्वहारा वर्ग ही है। जबकि अमृत निकलते ही समर्थ वर्ग ने उसे हथियाने के लिए हर तरह की मोहिनियों का इस्तेमाल किया है। भोले -भाले वर्ग को बहलाया, फुसलाया, डराया, धमकाया या मारा पीटा तक गया और कभी चालाकी से तो कभी ताकत से अमृत कलश अपने और अपने लोगों के लिए हथिया लिया। यह आजादी के अमृत महोत्सव के अमृत मंथन का सबसे कटु सत्य भी है और अनुभव भी।

कौन छुपा रहा असलियत ?



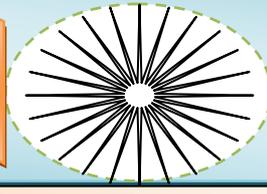
बेशक, विस्फोटक अंदाज में बढ़ती हुई जनसंख्या ने प्रगति की राह में रोड़े ही नहीं अटकाए अपितु बड़ी - बड़ी दीवारें भी खड़ी की और इन दीवारों पर स्वार्थी और लोलुप तत्वों ने जाति, धर्म, मजहब, ऊंच-नीच, सांप्रदायिकता और क्षेत्रवाद का ऐसा रंग पोता कि आम आदमी को असलियत नजर ही नहीं आ पाई और जब कुछ निष्पक्ष बुद्धिजीवियों ने यह रंग - रोगन उतारकर इन दीवारों का असली रंग दिखाने की कोशिश की तो उनके मुंह कभी लालच, कभी पुरस्कारों से कभी दमन या चालाकी से बंद कर दिए गए यानी सत्ता पर काबिज वर्ग ने इस बात का पूरा इंतजाम करके रखा कि उसकी असलियत कभी सामने न आए।

चौथे खंभे का कड़वा सच :

मीडिया को लोकतंत्र का चौथा खंभा कहा जाता है और निष्पक्षता व स्वस्थ जनमत का निर्माण करना इसकी पहचान है मगर क्या मीडिया सचमुच आज ऐसा कर पा रहा है? जिन हाथों में अब अखबार टीवी चैनल तथा सोशल मीडिया की कमान है उनके अपने स्वार्थ लालच तथा किसी हद तक भय भी इसके जिम्मेदार हैं। आज के परिवेश में कोई भी चैनल अखबार एंकर या सोशल मीडिया का मंच सत्ता पक्ष के खिलाफ बोलने की ज़रूरत महसूस करता है और नहीं हिम्मत है।

कौन लगा रहा साख को बट्टा ? :

ढूँढने पर आएंगे तो हजारों अमृत और लाखों हलाहल ढूँढे जा सकते हैं स्वाधीनता के बाद के भारत मंथन में। लेकिन ऐसा करना अमृत महोत्सव की उत्सव धर्मिता का अपमान होगा। उत्सव का अवसर है तो उत्सव मनाना भी चाहिए मगर यह भी नहीं भूलना चाहिए कि कहीं उत्सवों की झाँक में कोई हमें हलाहल न पिला जाए। राजनैतिक स्यापा करने वालों को भी सोचना चाहिए कि जब वे संसद भी नहीं चलने देते हैं तब उनकी नैतिकता कहां जाती है? मान लेते हैं कि सरकार ने बहुत चालाकी से अपने पासे फेंके मगर जब संसद का पूरा सत्र बार बार हंगामों की भेंट चढ़ जाता हो तब दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की साख पर बट्टा तो लगता ही है। बेहतर हो कि सत्ता पक्ष एवं विपक्ष केवल अपने बारे में नहीं देश के बारे में सोचें तो आजादी के अमृत काल में सभी के हिस्से अमृत आ पाएगा।



फूलों का विचित्र संसार

बृजेश कुमार

माली आवत देखि के, कलियाँ करें पुकार।
फूली-फूली चुनि गई, कालि हमारी बार॥

मृत्यु रूपी माली को आता देखकर अल्पवय जीव कहता है कि जो पुष्पित थे अर्थात् पूर्ण विकसित हो चुके थे, उन्हें काल चुन ले गया। कल हमारी भी बारी आ जाएगी। अन्य पुष्पों की तरह मुझे भी काल कवलित होना पड़ेगा।

कबीर:-

फूल से पूछता अगर कोई।
तो बिहँस वह यही बात पाता।
काम के हैं महल न सोने के।
हैं हमें मन हरा भरा भाता।

खिलते ही कितनी देर के लिये हैं फूल ?

इतना क्षणिक जीवन और इतना उत्साह ,

क्या अद्भुत है , प्रभु की ये सुन्दर रचना ।

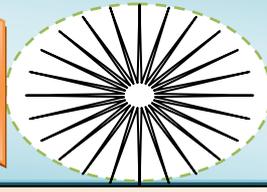
उसे फिर नहीं जीवन की क्षणिकता की, वो तोड़ा जाता है, वो मुरझा जाता है, वो सूख जाता है , वो पाँव तले मसला जाता है लेकिन ये सब झेलने से एक क्षण पूर्व भी मुस्कराहट ही देता रहता है ।

वो भी सबको, हर किसी को, कोई भेद भाव नहीं, सबके लिये समान ।

ना वो अपनी खूबसूरती पर अभिमान करता है, ना छोटे से जीवन का अवसाद ।

वो हर हाल में फूल है

किसी कवि ने कहा है



जिसकी रचना इतनी सुन्दर
वो कितना सुन्दर होगा ?

सच में जिस परम पिता ईश्वर ने इस सुन्दर कृति को बनाया वो कितना सुन्दर होगा |

कभी प्रकृति के समीप जाकर अकेले बैठ कर देखिये आपको ऐसा लगेगा जैसे कुछ देर आपको ईश्वर की गोद में बैठने को मिल गया हो ?

बहुत रंग बहुत रूप होते हैं फूलों के, लेकिन फितरत एक जैसी, खुशबू बिखेर देना चारों ओर ,और खुद मिट जाना

कभी हमें क्लास रूम के बाहर मिलने वाली सीख भी तो लेनी चाहिए | वो किताब भी तो पढनी चाहिये जो खुद भगवान ने लिखी है | , क्या उस शिक्षा पर भरोसा नहीं तम्हें ?

फिर मंदिर क्यों जाते हो ?

फूलों को लेने की परवाह नहीं, उन्हें तो अपनी खुशबू को चारों तरफ बिखेर देना होता है और फिर खुद को

वो फिर भी खुशी देना नहीं रोकते नहीं और

हम हर समय व्यापार ही करते रहते हैं, कोई हमें दुखी करे तो हम उस से ज्यादा देकर ही संतुष्टि पाते हैं |

फूल ये तो नहीं सिखाते |

ईश्वर और उनकी रचनाएं कभी स्वार्थी नहीं होते, वे ये नहीं देखते कि उन्हें मिला क्या है, वे केवल ये देखते हैं कि उन्हें

क्या देना है ?

जैसे प्रकृति , वो कुछ मांगती नहीं |

फूलों की तरह बनो वही ईश्वर की पूजा है, ना कि ईश्वर के आगे अगबरती करने से तुम आस्तिक बन जाओगे |

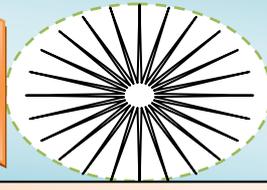
लाल, पीला, हरा, गुलाबीकितने रंग बिरंगे फूल

हम ने काँटों को भी नरमी से छुआ है

अक्सर

लोग बेदर्द हैं फूलों को मसल देते हैं

फूल हमेशा मुस्कराता रहता है। काव्य में यह कह गया है कि बगिया के फूलों को देखो, कैसे खुश-खुश रहते हैं। आंधी हो, पानी हो चाहे, सबको हँस-हँस सहते हैं। प्रकृति के गोद में ही सब जन्म लेते हैं। इसी में सब



फलते-फूलते हैं अथवा अंत में इसी में समा जाते हैं। प्रकृति सदैव ही किसी ना किसी रूप में हमें कुछ देती ही रहती है। फूल हर स्थिति में अपने आसपास प्रसन्नता का ही माहौल बनाए रखता है। इससे पता चलता है कि प्रकृति हमारे लिए कितनी महत्वपूर्ण है।

एक फूल जो अपना पूरा जीवन दुसरो की खुशी के लिए न्योछावर कर देता है वैसे ही हमें भी अपनी ज़िन्दगी दुसरो के खुशी के लिए जीना चाहिए अगर आप किसी का भला न करे तो कोई बात नहीं लेकिन आपकी वजह से किसी की बुरा तो नहीं होना चाहिए।

एक कमल का फूल हमें ये सीखाता है कि हमारे आसपास चाहे कितनी ही गंदगी क्यों हो , हमारे आसपास चाहे कितनी ही बुराई क्यों न हो लेकिन उनमें हमारी अच्छाई अपनी जगह तलाश कर ही लेती हैं फूल के अंदर सबको खुशबू देने की एक अच्छी आदत होती है और उसी अच्छी आदत से लोग फूल को अपने पास रखते है फूल के प्रति आकर्षित होते हैं , वैसे ही इंसान के अंदर भी एक अच्छी आदत होनी चाहिए , जिसे लोग उसे पसंद करे।

एक फूल को ये पता है की अगर मैं खिलूँगा तो लोग मुझे तोड़ देंगे लेकिन फिर भी वह खिलता है और खुशबू देता है और दुसरो के लिए काम आता है, वैसे ही हमें भी अपने भविष्य के बारे में चिंता नहीं करनी चाहिए । जो जन्म लेता है , उसे एक दिन मरना ही है, बस हमें अपनी ज़िन्दगी फूल की तरह मुस्कुराते हुए जीना है और अपनी अच्छी आदतों से दुसरो का भला करना है । गुलाब का फूल , हमेंशा काँटों के बीच रहता है लेकिन कभी भी वो काँटों की तरह दूसरो को चुभता नहीं और उनको नुकसान नहीं पहुँचाता ।

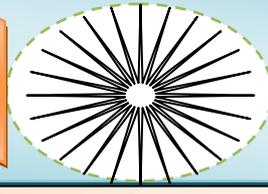
इसी प्रकार हम भी भले ही बुरे लोगो के पास रहे, लेकिन हमें उनकी बुरी आदते , अपनी ज़िन्दगी में नहीं लानी चाहिए। यानि कि कोई भी इंसान बुरे से बुरे लोगो के साथ रहकर भी गुलाब की तरह एक अच्छा इंसान बन सकता है ।

एक फूल दुसरो को खुशबू देने के लिए , दूसरों के लिए टूटना पसंद करता है लेकिन कभी भी खुशबू देना नहीं छोड़ता वैसे ही हमें भी अपनी ज़िन्दगी में चाहे कोई हमारा गलत इस्तेमाल ही क्यों न करे लेकिन फिर भी हमें अपने अच्छे कर्म को नहीं छोड़ना चाहिए ।

फूल हमें अच्छाई पर चलना , बुराई से प्रभावित हुए बिना सिखाते हैं ।

एक फूल अपनी सुगंध को चारो दिशा में फैलता है वैसे ही हमें भी अपने अच्छे कर्मो को चारे और फैलाना चाहिए क्योकि हमारा कर्म ही हमारी पहचान है ।

एक फूल हमेंशा मुस्कुराता हुआ , खिलखिलाता हुआ अपनी खुशबु बिखरता है वैसे ही , हमें भी फूल की तरह सदैव मुस्कुराते हुए रहना है और दूसरे के प्रति अपने कर्म करते रहता है।



गुलाब हमेशा काँटों के बीच ही पैदा होता है, ऐसे ही आप भी किसी परिस्थिति में क्यों न हो आप भी अपनी अलग पहचान बना सकते हैं बिलकुल गुलाब की तरह यानि कि गुलाब का फूल , हमें ये सीखाता हे की हमें मुश्किलों के बीच राह कर भी किस तरह आगे बढ़कर दूसरो के जीवन में खुशियों बिखराकर अपने कर्तव्य के पथ पर आगे बढ़ना है ।

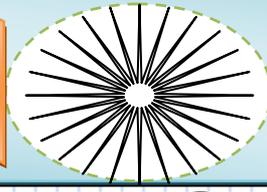
रोज के सैकड़ों बखेड़ों में।
वे न जायें बुरी तरह फाँसे।
हैं खिलाती खुली हवा उनको।
फूल हैं ओस बूँद के प्यासे।



चित्रकार- अनामिका सिंह

कक्षा-7

सेंट जोसेफ्स को एड स्कूल भोपाल(म प्र)



* दूर दृष्टि *

डॉ आर बी भण्डारकर

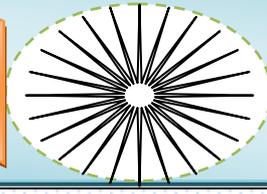
गाँव के पश्चिम की ओर पहले बीहड़ था, जिसमें हींस, करौंदा, करील, खैर, झरबेरी, हिंगोटा आदि झाड़ीदार वनस्पति बहुतायत में थी। इस बीहड़ में नीम, शीशम, बबूल, बेरी, छेकुर आदि के बड़े बड़े पेड़ भी खूब थे। इसलिए इनमें मोर, गेंगा, गलगल(मैना) पण्डूक, उल्लू(खूसट), देसी चिड़िया आदि अनेक प्रकार के पक्षी तथा लोमड़ी, सियार, हिरण, सेही, बिज्जू, भेड़िया, चरखा आदि अनेक जंगली जानवर झुण्ड के झुण्ड रहते थे।

कालांतर में कुछ प्राकृतिक कारणों से और कुछ मानव दखलंदाजी से बीहड़ उजड़ गया। पेड़-पौधे, पक्षी व जंगली जानवर भी नदारद हो गए।

राजतंत्र युग था। आसपास के लोग राजा की अनुमति से बीहड़ में खेती करने लगे। बुद्धसिंह ने भी यहाँ लगभग 5 बीघे का अपना खेत तैयार कर लिया। इस खेत का निचला लगभग तीन बीघा हिस्सा तो एकदम समतल, थरेट था, नीचे मजबूत बांध बना देने से उसमें बरसात में कुछ दिनों तक पानी भी भरा रहता था, जिससे वह खूब उपजाऊ था पर पश्चिम ओर का लगभग दो बीघे का ऊपरी भाग ढालू, ऊबड़-खाबड़, कँकरीली मिट्टी वाला था।

इस खेत में बुद्धसिंह एकान्तर से फसल बोते थे। एक साल खरीफ की फसल, जिसमें बाजरा, अरहर, मूँग, राँसा, मोंठ, डढारी, तिली आदि बोते थे तो अगली साल रबी की फसल, जिसमें चना, बेझर(जौ) अलसी, लाहा, सिहुँआ आदि बोते थे। दोनों ही फसलें निचले बंधा वाले हिस्से में तो खूब होती थीं पर ऊपर के ढालू, कँकरीले हिस्से में अलवत्ता तो फसल उगती ही नहीं थी, अगर कुछ बीज उग भी आयें तो दो-चार दिनों की धूप में ही कुरमुरा कर सूख जाते थे। हाँ खेत के किनारे बबूल के कुछ पौधे अवश्य पनप जाते थे।

कई साल के अनुभव के बाद बुद्ध सिंह को एक युक्ति सूझी। अबकी बार वर्षा आरम्भ होते ही उन्होंने खेत के पूरे ऊपरी हिस्से में बबूल के पौधे कतार-बार लगा दिए।

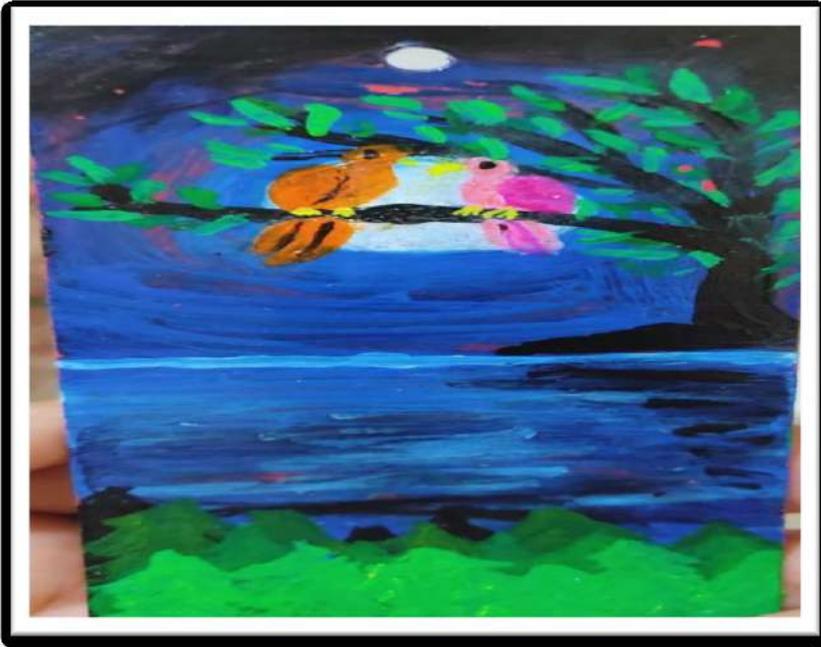


आसपास के लोगों ने देखा,आपस में खुसुर-फुसुर की- “लगता है बुद्धसिंह पगला गया है,... अरे यह तो बुद्धू हो गया है,... कहीं बबूल की भी खेती की जाती है।..अरे क्या करेगा,इतने बबूल को।“ उँह क्या करना है अपुन को;...कभी कभी कुछ सिहुँआ,तिली या मूँग, मॉठ हो भी जाती थी,उससे भी गया।“

“दिवस जात नहिं लागिहि बारा।“ पंद्रह वर्ष का समय कब निकल गया पता ही नहीं चला। बुद्ध सिंह का हर्षा लगा न फिटकरी;प्रकृति ने ही बबूल का सुंदर बगीचा तैयार कर दिया।पेड़ों के सुडौल तने,डालियाँ देखते ही बनती हैं।अब बुद्ध सिंह का यह बगीचा आसपास चर्चा का विषय है।ईट भट्ठे वाले ईटे पकाने के लिए तो लकड़ी के कारोबारी अपने बिजनेस के लिए पूरा बगीचा एक साथ मुँह माँगे दामों में खरीदने को लालायित हैं।

सरपंच जी अपने खास दोस्त नंद सिंह से कहते हैं-“भाई जिसे अपुन लोगों ने बुद्धू समझा, कहा ,वह तो बड़ा चतुर निकला; रबी या खरीफ की फसल से इतने दिनों में इसकी दस प्रतिशत कमाई भी न हो पाती।“

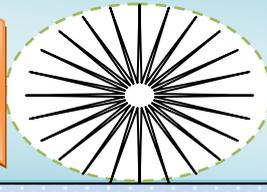
नन्द सिंह-सरपंच जी इसे कहते हैं दूर दृष्टि।



चित्रकार- अनामिका सिंह

कक्षा-7

सेंट जोसेफ्स को एड स्कूल भोपाल(म प्र)

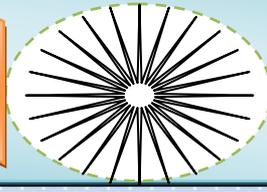


धर्म-राजनीति अंतर्संबंध

सलिल सरोज

भारत

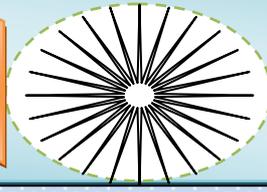
वह राष्ट्र है जो शांति और सद्भाव में विश्वास करता है, और धर्म और अहिंसा के मूल्यों को बढ़ावा देता है। भारतीय लोकतंत्र की स्थिरता का श्रेय हमारे देश की सामूहिकता की मजबूत भावना, अहिंसा के गुणों में हमारे दृढ़ विश्वास और स्वतंत्रता, समानता, न्याय और भाईचारे के संवैधानिक मूल्यों की हमारी स्वीकृति और पालन को दिया जाता है। भारत में, हम सभी सबसे पहले अपनी पहचान भारतीय के रूप में करते हैं और यही हम सभी को एक साथ बांधता है। उन शक्तियों द्वारा फैलाए गए झंझावात के सामने, जो हमें विस्तारित और एकीकृत नहीं देखना चाहते, यह आस्था और विश्वास ही है जो हमें मजबूत और एकजुट बनाए रखेगा। लोगों को हमारे समाज में मौजूद आपसी सम्मान और स्वीकार्यता को कमजोर करने वाली झूठी सूचनाओं से सावधान रहने की जरूरत है। लेकिन, राष्ट्र की रक्षा करते हुए विश्व बंधुत्व को बढ़ावा देना सभी निवासियों का दायित्व है। लोकतंत्र संवाद को बढ़ावा देता है। यह सभी हितधारकों को भाग लेने के लिए संलग्न और प्रोत्साहित करता है। धार्मिक नेता, विद्वान और संस्थान लोकतांत्रिक समाज का एक महत्वपूर्ण स्तंभ हैं और इसलिए, समाज में समझ, शांति और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जो प्रगति, समृद्धि और जीवन की उच्च गुणवत्ता के लिए एक पूर्व शर्त है। इंटरफेथ डायलॉग पर संसदीय सम्मेलन उन प्रमुख मुद्दों और चुनौतियों का पता लगाने और पहचानने के लिए सांसदों और धार्मिक अभिनेताओं को एक साथ लाता है जिनका आज हमारा समाज सामना कर रहा है। इसका उद्देश्य लचीले समाजों का निर्माण करना, आगे बढ़ना, समावेशी, सम्मानजनक समुदाय और अधिक शांतिपूर्ण और न्यायपूर्ण दुनिया बनाना है। कई संस्कृतियों, आस्थाओं और भाषाओं का एक विशाल संश्लेषण, भारत दुनिया के सबसे धार्मिक रूप से विविध देशों में से एक है, जहां प्रत्येक व्यक्ति अपने स्वयं के संस्कारों और मान्यताओं का पालन करने के लिए स्वतंत्र है। भारतीय सभ्यता का इतिहास विचारों, दर्शन और आध्यात्मिक जीवन की विविधता के अबाधित विकास को दर्ज करता है। और, धार्मिक स्वतंत्रता और सहिष्णुता के मौलिक अधिकार की गारंटी देने वाला हमारा संविधान एक ऐसे समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है जो अधिक शांतिपूर्ण, सामंजस्यपूर्ण और लोकतांत्रिक है। पूरे इतिहास में धर्म और राजनीति एक दूसरे से जुड़े हुए हैं। प्रत्येक प्राचीन राजनीतिक इकाई में, धर्म के राजनीति से अच्छी तरह जुड़े



होने के निशान मौजूद हैं। यह मिस्र, ग्रीस, मेसोपोटामिया, बेबीलोनियन, फ़ारसी, रोमन साम्राज्य और कई अन्य साम्राज्यों के बारे में सच है। यह प्रागैतिहासिक काल का भी सत्य है। प्रत्येक शहर, राज्य और राज्य का अपना देवता था। जब लोग युद्ध में जाते थे तो वे अपने देवताओं की स्वीकृति चाहते थे। कई समाजों में, राजनीतिक वर्ग और पुरोहित वर्ग एक-दूसरे पर दृढ़ता से निर्भर थे और एक-दूसरे के निर्णयों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते थे। आधुनिक समय में, जबकि अधिकांश मामलों में, राज्य और धार्मिक संस्थाएँ अलग-अलग संस्थाएँ हैं, फिर भी कुछ राज्य ऐसे हैं जो अभी भी आधिकारिक धर्म का समर्थन करते हैं। धर्मों का राज्यों और व्यक्तियों के राजनीतिक व्यवहार पर गहरा प्रभाव पड़ता है। राज्य के भीतर, इसमें शामिल है कि कैसे धार्मिक संस्थाएँ और संगठन सरकार पर प्रभाव डालते हैं या दबाव डालते हैं - उसके फैसले और गतिविधियाँ; राज्य में धार्मिक स्वतंत्रता या धर्मनिरपेक्षता; और यह भी कि सरकारें धार्मिक गतिविधियों को कैसे विनियमित और नियंत्रित करती हैं। दूसरी ओर, धर्म राज्यों के बीच संबंधों को परिभाषित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे राज्य की विदेश नीति प्रभावित होती है। इसके अलावा, हमारे पास पहले भी अंतरराष्ट्रीय संबंधों में धर्म जैसे मुद्दे हैं, और हाल ही में, हमारे पास धार्मिक कट्टरवाद के मुद्दे हैं।

अंतर-धार्मिक सहिष्णुता और धर्म और विश्वास की स्वतंत्रता आवश्यक मानवाधिकार हैं जिन्हें अंतरराष्ट्रीय कानून द्वारा संरक्षित किया गया है। पिछले कुछ वर्षों में, अंतरधार्मिक सहिष्णुता और धर्म या विश्वास की स्वतंत्रता का समर्थन करने के लिए कई अंतरराष्ट्रीय उपकरण बनाए गए हैं। ये दस्तावेज़ इन आवश्यक मानवाधिकारों की सुरक्षा के मूल्य पर जोर देते हैं और सरकारों से धर्म या विश्वास के आधार पर भेदभाव को रोकने और समाप्त करने के साथ-साथ विभिन्न धार्मिक और विश्वास समुदायों के बीच सहिष्णुता और पारस्परिक सम्मान को बढ़ावा देने के लिए ठोस कदम उठाने का आग्रह करते हैं। इस दिशा में हुई कुछ प्रमुख प्रगतियों में निम्नलिखित शामिल हैं:

- मानव अधिकारों की सार्वभौम घोषणा (यूडीएचआर) - 1948
- नागरिक और राजनीतिक अधिकारों पर अंतरराष्ट्रीय समझौता (आईसीसीपीआर) - 1966
- सभी प्रकार की असहिष्णुता और भेदभाव के उन्मूलन पर घोषणा
- धर्म या विश्वास पर आधारित- 1981
- धर्मों और सभ्यताओं के बीच संवाद और आपसी समझ को बढ़ावा देने की घोषणा
- अंतरराष्ट्रीय समुदाय के भीतर अंतर-धार्मिक सद्भाव के निर्माण पर बाली घोषणा
- सभ्यताओं के बीच संवाद के लिए वैश्विक एजेंडा 2001
- सहिष्णुता पर सिद्धांतों की घोषणा

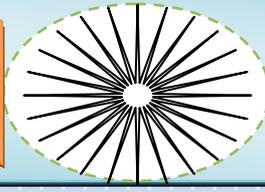


- राष्ट्रीय या जातीय, धार्मिक या भाषाई अल्पसंख्यकों से संबंधित व्यक्तियों के अधिकारों पर घोषणा
- विश्व और पारंपरिक धर्मों के नेताओं की दूसरी कांग्रेस की घोषणा
- शांति और सद्भाव के लिए अंतर-धार्मिक सहयोग पर नोम पेन्ह संवाद 2008
- भेदभाव, शत्रुता या हिंसा को उकसाने वाली राष्ट्रीय, नस्लीय या धार्मिक घृणा की वकालत के निषेध पर रबात कार्य योजना - 2012 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा अपनाई गई
- मराकेश घोषणा-2016

संयुक्त राष्ट्र भी अंतर-धार्मिक सद्भाव से संबंधित अंतर्राष्ट्रीय दिवस/पर्व मनाने के माध्यम से इस पद्धति को आगे बढ़ा रहा है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त कुछ प्रमुख पालन हैं -

- 2010 से विश्व अंतरधार्मिक सद्भाव सप्ताह (1-7 फरवरी)
- अंतर्राष्ट्रीय मानव बंधुत्व दिवस - 4 फरवरी
- शांति से एक साथ रहने का अंतर्राष्ट्रीय दिवस - 16 मई
- संवाद और विकास के लिए सांस्कृतिक विविधता का विश्व दिवस - 21 मई
- अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस - 21 सितंबर
- अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस - 2 अक्टूबर
- अंतर्राष्ट्रीय सहिष्णुता दिवस - 16 नवंबर
- अंतर्राष्ट्रीय मानव एकजुटता दिवस - 20 दिसंबर

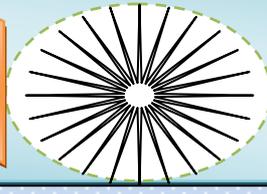
भारत में धार्मिक बहुलता और विविधता का एक लंबा इतिहास रहा है, और इसने कई धर्मों को स्वीकार करने और समायोजित करने की उल्लेखनीय क्षमता का प्रदर्शन किया है। यह धर्मनिरपेक्ष सरकार, समन्वयवादी आंदोलनों और अंतरधार्मिक सहिष्णुता की भूमि है। पूरे देश में अनेक धर्म - हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म, इस्लाम और ईसाई धर्म, प्रचलित हैं। भारत में अंतरधार्मिक सहिष्णुता के सबसे पुराने उदाहरणों में से एक का पता प्राचीन मौर्य साम्राज्य (322-185 ईसा पूर्व) में लगाया जा सकता है, जिसकी कमान सम्राट अशोक के पास थी। उन्होंने हिंदू धर्म और जैन धर्म सहित अन्य धर्मों के अभ्यास को बढ़ावा दिया, जबकि दुनिया के अन्य हिस्सों में बौद्ध धर्म का विस्तार करने के लिए मिशनरियों को भी भेजा। भक्ति आंदोलन, जो मध्यकालीन भारत में शुरू हुआ, ने धार्मिक सहिष्णुता के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया। आंदोलन के कई समर्थकों ने अन्य धर्मों के लोगों के प्रति दयालु दृष्टिकोण को



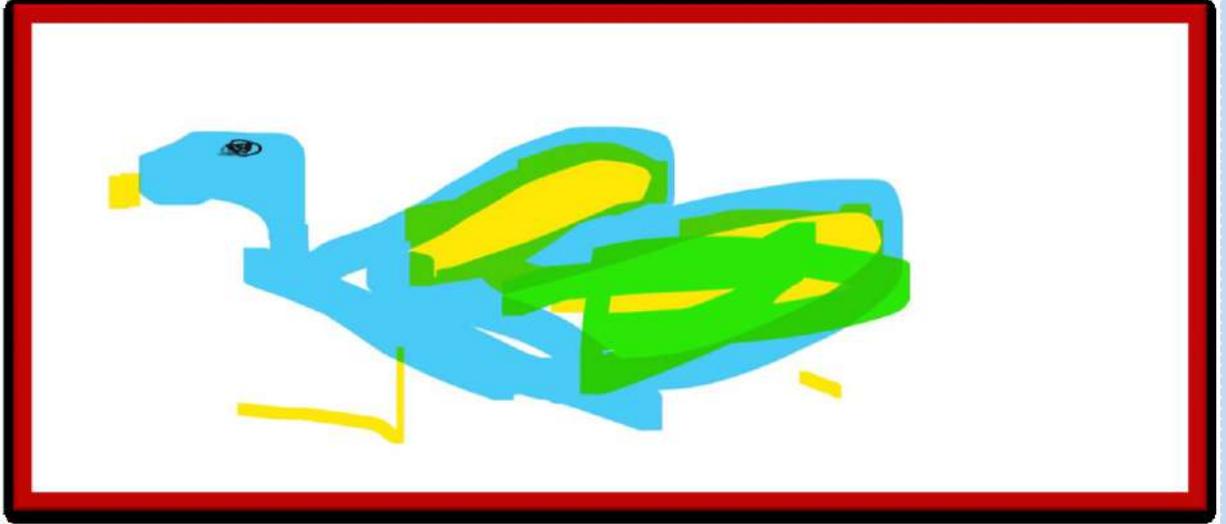
बढ़ावा दिया, अनुष्ठान या जाति के कठोर पालन से ऊपर भगवान के प्रति व्यक्तिगत भक्ति के मूल्य पर जोर दिया। भारत ने मुगल वंश (1526-1858) के दौरान कला, वास्तुकला, साहित्य और संगीत का एक समृद्ध काल देखा, जिसमें इस्लामी और हिंदू परंपराओं का मिश्रण देखा गया। मुगल बादशाहों, विशेषकर अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ ने विभिन्न धर्मों और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के बुद्धिजीवियों और कलाकारों का समर्थन किया और धार्मिक सहिष्णुता की नीति की वकालत की। विशेष रूप से, अकबर दीन-ए-इलाही नामक समधर्मी धर्म को बनाने के अपने प्रयासों के लिए प्रसिद्ध है, जिसमें ईसाई धर्म, इस्लाम, हिंदू धर्म और पारसी धर्म के पहलुओं का मिश्रण था। विश्व धर्म संसद, 1893 - स्वामी विवेकानन्द ने 1893 में शिकागो में आयोजित विश्व धर्म संसद में भारत और हिंदू धर्म का प्रतिनिधित्व किया। अपने शानदार भाषण के साथ, वह सम्मेलन में सबसे प्रमुख व्यक्तित्व के रूप में उभरे। उन्होंने दुनिया को सभी धर्मों के बीच सद्भाव और सहिष्णुता का संदेश दिया। सह-अस्तित्व, सद्भाव और अंतर-धार्मिक धर्मों के प्रति भारत का दृष्टिकोण: भारत दुनिया के कई विश्वासों और धर्मों का जन्मस्थान है। वास्तव में, विविध आस्थाओं, विश्वासों, परंपराओं और भाषाओं की जटिल पच्चीकारी भारत को दुनिया के सबसे विविध और बहुलवादी समाजों में से एक बनाती है। भारत का संविधान धार्मिक स्वतंत्रता के अधिकार (अनुच्छेद 25 से 28) को मौलिक अधिकार के रूप में प्रदान करता है। यह धार्मिक स्वतंत्रता और सहिष्णुता को बढ़ावा देने और बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई संवैधानिक उपाय भी प्रदान करता है।

- अनुच्छेद 25 प्रत्येक व्यक्ति को अपनी पसंद के धर्म को स्वतंत्र रूप से मानने, अभ्यास करने और प्रचार करने का अधिकार देता है।
- अनुच्छेद 26 धार्मिक समुदायों को स्वायत्त रूप से अपने हितों को नियंत्रित करने के अधिकार का समर्थन करता है, विशेष रूप से धार्मिक और परोपकारी उद्देश्यों के लिए प्रतिष्ठानों का निर्माण और समर्थन करने का विशेषाधिकार।
- अनुच्छेद 27 के अनुसार, राज्य के लिए व्यक्तियों को किसी विशेष धार्मिक विश्वास प्रणाली या संबंधित धार्मिक प्रतिष्ठान की उन्नति या भरण-पोषण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने के लिए बाध्य करना अस्वीकार्य है।
- अनुच्छेद 30 धर्म की सामूहिक स्वतंत्रता से संबंधित है: सभी अल्पसंख्यकों को, चाहे वे धर्म या भाषा पर आधारित हों, अपनी पसंद के शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना और प्रशासन करने का अधिकार होगा।

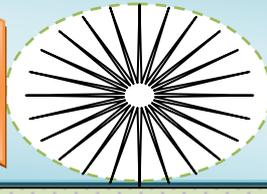
एशियाई क्षेत्र और दुनिया भर में शांति, स्थिरता और सहयोग को बढ़ावा देने के लिए भारत के समर्पण ने पारंपरिक रूप से इसकी विदेश नीति को प्रभावित किया है। शांतिपूर्ण



सह-अस्तित्व और पारस्परिक सम्मान के मूलभूत सिद्धांतों के आधार पर, भारत की विदेश नीति ने सार्वभौमिक भाईचारे को बढ़ावा दिया। धार्मिक बहुलता के लंबे इतिहास वाले देश, भारत ने हमेशा अंतरधार्मिक जुड़ाव को प्राथमिकता दी है। देश और विदेश दोनों जगह, भारत ने अंतरधार्मिक संचार और कूटनीति को आगे बढ़ाने के लिए काम किया है। धार्मिक सहिष्णुता, शांतिपूर्ण सहवास और वैश्विक भाईचारे को बढ़ावा देने का विचार दुनिया के साथ भारत के जुड़ाव का मूलभूत स्तंभ बना हुआ है।



चित्रकार- मा.अगस्त्य प्रताप सिंह
कक्षा-2
सागर पब्लिक स्कूल भोपाल(म प्र)



शिक्षा का सफर: परीक्षा में सफलता के लिए प्रेरणा

डा. शिवा धमेजा

शिक्षा

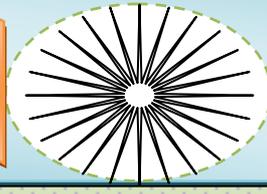
जीवन का एक महत्वपूर्ण अध्याय है जो हर किसी के लिए एक चुनौतीपूर्ण सफर होता है। परीक्षा देने का वक्त आते ही, छात्रों के दिल में उम्मीद और चिंता की भावना दोनों अपनी जगह बना लेती हैं। सफलता की उच्च चोटी को छूने के लिए, सभी स्टूडेंट्स को सकारात्मक सोच और मेहनत के साथ अपने लक्ष्यों की ओर बढ़ना होता है। विद्यार्थियों के लिए, मेहनत शिक्षा में सफलता की कुंजी है। अध्ययन में लगन, नियमित अभ्यास और समय का सदुपयोग उन्हें उनके लक्ष्यों की प्राप्ति में मदद करते हैं। विद्यार्थियों को अपने स्टडी प्लान को समय-समय पर बदलने की आवश्यकता होती है और नियमित अभ्यास द्वारा वे अपने विषयों में विशेषज्ञता प्राप्त कर सकते हैं।

परीक्षा दिनों में, जब आपको अपनी पढ़ाई से, भविष्य जुड़ा हुआ महसूस होता है, तो अपने अंदर छिपी हुई सामर्थ्य को जागृत करें। आपकी मेहनत और लगन आपको सफलता की उंचाइयों तक पहुंचा सकती है। याद रखें, सफलता का मार्ग धीरे-धीरे चलने वाला होता है, इसलिए हार न मानें और जीत की ओर अपनी कदम बढ़ाते रहें।

बदलते समय में, आपको अपने अंदर के ज्ञान और क्षमताओं को निखारने की आवश्यकता होती है। विषयों को समझने के लिए अध्ययन के साथ-साथ अधिक अनुसंधान करना भी महत्वपूर्ण है। इससे आपके आत्मविश्वास में सुधार होगा और आप परीक्षा में सफलता प्राप्त करेंगे।

धैर्य और स्थिरता रखने का भी महत्व है। कभी-कभी, परीक्षा देने में हार्डले आ सकते हैं लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि आप हार मानें। इस समय पर आपको सकारात्मक सोच और मननशीलता की आवश्यकता होती है।

अंततः, याद रखें कि परीक्षा सिर्फ एक मौका है, जो न सिर्फ आपका भविष्य निर्धारित करती है बल्कि यह आपके अंदर छिपे हुए व्यक्तित्व को भी बढ़ाती है। सफलता ऐसी यात्रा है, जिसमें आपको अपने संघर्षों का सामना करना होगा। इस यात्रा का आनंद लें, उतार-चढ़ावों से समझौते न करें और एक अच्छे इंसान के रूप में प्रगति करने का प्रयास करें। सोचिए अगर आप आज से प्रयास करना शुरू कर देते हैं, तो आपका भविष्य चमकता हुआ नजर आएगा। इसलिए, विचार करें।



भारत एक ऐसा देश है जिसमें अनेकों नेतृत्वी पुरुषों और महिलाओं को जन्म लिया है, जिन्होंने अपनी मेहनत और परिश्रम से न केवल अपने नाम को बल्कि देश के नाम को भी रोशन किया है। इनमें से कुछ व्यक्तित्व भारत के इतिहास में इतने महत्वपूर्ण हैं कि उनके बारे में लिखना असंभव है, फिर भी, विभिन्न क्षेत्रों में अपने उदाहरणों को प्रस्तुत करने वाले कुछ व्यक्तियों के बारे में हम यहां चर्चा करेंगे। उनकी जीवनी को पढ़ना अपनी आदत बनाएं।

महात्मा गांधी: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक महात्मा गांधी ने अपनी अहिंसा और सत्याग्रह की शिक्षा से देश को आजादी दिलाने में अहम योगदान दिया। उनकी मेहनत, समर्पण और त्याग देश भक्ति की श्रेष्ठता का संकेत करते हैं।

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम: भारत के 11वें राष्ट्रपति और प्रमुख वैज्ञानिक, डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम ने अपने योगदान से देश को विज्ञान और तकनीक क्षेत्र में अनुसंधान का मार्ग दिखाया। उनकी मेहनत और अनुशासन एक आदर्श उदाहरण हैं।

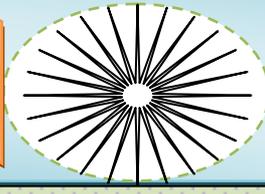
मदर टेरेसा, जिन्हें पूरी दुनिया में प्यार से "मां टेरेसा" के नाम से जाना जाता है, ने अपने दिनचर्या के माध्यम से गरीब और बेसहारा लोगों के लिए असीम प्रेम और सेवा का संदेश दिया। उनका समर्पण और दयालुता एक अद्भुत उदाहरण है।

साचिन तेंदुलकर: भारतीय क्रिकेट के दिग्गज, साचिन तेंदुलकर ने अपनी एकलव्य भावना और मेहनत से विश्व क्रिकेट के इतिहास में अपना अलग मुकाम बनाया है। उनके धैर्य, संघर्ष और विजयी स्पर्धा के लिए उन्हें सलामी दी जाती है।

मैरी कॉम: भारतीय महिला पुगिलिस्ट, मैरी कॉम ने अपने प्रतिरोधी क्षेत्र में अपनी मेहनत और सामर्थ्य से अनगिनत सफलता प्राप्त की है। उन्हें उत्कृष्ट खिलाड़ी बनने के लिए प्रशंसा की जाती है। इनकी जीवनी, एक बात स्पष्ट कर देती है कि मेहनत का कोई विकल्प नहीं होता।

रवींद्रनाथ टैगोर: भारतीय साहित्य के महान कवि रवींद्रनाथ टैगोर ने अपनी कविता और साहित्यिक रचनाओं के माध्यम से देशवासियों को प्रेरित किया। उनके लेखन के पीछे भी मेहनत का विशेष महत्व था।

सत्यार्थी साना: भारतीय बच्चे जिन्हें स्वर्ण पदक विजेता सत्यार्थी साना ने मेहनत और समर्पण से बड़ी उपलब्धियों की है। उन्हें अपने प्रयासों की मेज़बानी और समर्पण के लिए सम्मान किया जाता है।



राहुल द्रविड़: भारतीय क्रिकेट के पूर्व कप्तान राहुल द्रविड़ ने अपने मेहनती और समर्पित प्रयासों से खेल के क्षेत्र में महानता हासिल की। उन्हें उनकी सफलता के पीछे मेहनत का बड़ा योगदान रहा।

इन सभी व्यक्तियों ने मेहनत के द्वारा अपने लक्ष्यों की प्राप्ति की है और समाज को प्रेरित किया है। उनके उदाहरण से हमें यह सीख मिलती है कि मेहनत और समर्पण के बल पर हम अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकते हैं। इन व्यक्तित्वों से हमें ये सीखने को मिलता है कि मेहनत एक ऐसी शक्ति है, जो सफलता के दरवाजे खोलती है। विद्या, कला, खेल, व्यापार, या किसी भी क्षेत्र में सफल होने के लिए मेहनत अनिवार्य है। यह कहना गलत नहीं होगा कि मेहनत बिना सफलता असंभव है। अधिकांश लोग आदर्श जीवन और ऊँची मंजिलों को प्राप्त करने के लिए मेहनत के मार्ग को अपनाते हैं।

मेहनत एक अद्भुत गुण है जिसका परिणाम हमेशा अच्छा होता है। जिस तरह धूप के बिना फूल नहीं खिलते, वैसे ही मेहनत के बिना सफलता नहीं मिलती।

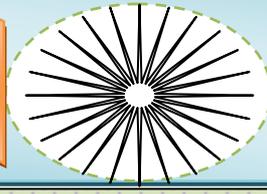
ऐतिहासिक काल में भारतीय ऋषियों ने शिक्षा के क्षेत्र में भी मेहनत को महत्वपूर्ण माना था। ऋषि-मुनियों ने यह सिखाया कि अध्ययन और तपस्या के माध्यम से ही मानव अपने आदर्शों को प्राप्त कर सकता है।

विद्या के क्षेत्र में भी मेहनत का महत्वपूर्ण स्थान है। विद्यार्थियों को न सिर्फ अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए बल्कि वे कड़ी मेहनत करके, अध्ययन करें। मेहनत के बिना कोई भी विद्यार्थी अध्ययन में सफल नहीं हो सकता है। ज्ञान के समुचित उपयोग के लिए भी मेहनत की ज़रूरत होती है।

सेवा के क्षेत्र में भी मेहनत का विशेष महत्व है। सेवा जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है जो समाज के लिए काम करता है। सेवाभावी व्यक्तियों को न सिर्फ अपने शारीरिक बल पर, बल्कि उनकी मेहनत और त्याग के परिणामस्वरूप समाज का सम्मान भी मिलता है।

व्यापार के क्षेत्र में भी मेहनत की महत्वपूर्ण भूमिका है। व्यापारी अपने उद्यम, समर्थन और समय के साथ-साथ मेहनत के माध्यम से अपने व्यवसाय को सफलता की ऊँचाइयों तक पहुंचाते हैं। मेहनती व्यापारी न केवल अपने व्यवसाय में सफल होते हैं, बल्कि उन्हें समाज में भी एक उदाहरण के रूप में देखा जाता है।

खेल के क्षेत्र में भी मेहनत का महत्व अनमोल है। खेल में सफल होने के लिए खिलाड़ियों को अधिकतम मेहनत की आवश्यकता होती है। वे अपने शारीरिक और मानसिक क्षमता को सुधारने के लिए दिनरात मेहनत करते हैं और नियमित अभ्यास करके अपने संभावनाओं को साक्षात् करते हैं। खेल में सफलता



प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों के नाम अनगिनत हैं, जो मेहनत और समर्पण के बल पर महान उपलब्धियों तक पहुंचे हैं।

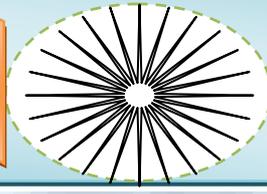
आप मेहनत का महत्व और इसके विभिन्न पहलुओं पर विचार कर सकते हैं। मेहनत के माध्यम से हम अपने शक्तियों को पहचानते हैं और स्वयं को समझते हैं। यह हमें समस्याओं का सामना करने, संघर्षों को झेलने और समस्याओं का समाधान करने की क्षमता प्रदान करता है। मेहनत की अपार शक्ति है जो हमें अपने लक्ष्यों की प्राप्ति करने में मदद करती है। यह हमारे लिए सफलता के दरवाजे खोलती है।



चित्रकार- अदिति सिंह

कक्षा 3

सेंट जोसेफ्स को एड स्कूल भोपाल (म प्र)

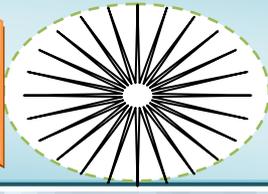


कविता

संघर्ष तो अभी बाकी है

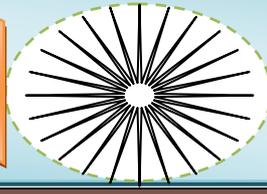
डा. उमेश प्रताप वत्स

छोड़ निराशा उठो पथिक,
संघर्ष तो अभी बाकी है।
दूर किनारा बुला रहा है,
पथ में काँटे भी बाकी है।
तम-तिमिर की ये राहें,
थाल सजाकर खड़ी पथिक।
चरैवेति-चरैवेति,
अभी राहे उजाला बाकी है।
न रुकना अभी न थकना कभी,
लक्ष्य साधे बढ़ते जाना।
बन शूरवीर और कर्मवीर,
इतिहास बनाना बाकी है।
उबड़-खाबड़, रोड़े-पत्थर, 2
राहें रोक न पाये कभी।
बन दृढ़ उपासक, धीर-वीर,
मंजिल आना अभी बाकी है।
ना ठहर तनिक तू चलता जा,
दीपक बाती सा जलता जा।
गोविन्द-शिवा के शौर्य सा,
ध्रुव बनना अभी बाकी है।
चिरकाल से संघर्ष की गाथा,
जो स्याह-रक्त से लिखता आया।



उसी तपस्वी महापुरुष को,
स्मरण करना भी बाकी है।
तोड़ निराशा के जाल को,
आशा की किरणें पुकार रही।
तू दो कदम बढ़ा कर तो देख,
आत्म-सुख खजाना बाकी है।





किससे हम फरियाद करें

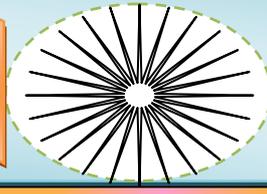
सर्वजीत सिंह

किससे हम फरियाद करें ?
बिन मारे जो स्वयं मरा हो,
जिसके अंग जहर भरा हो,
उससे क्या फरियाद करें,
क्या उससे हम बात करें।

चालाकी जिसमें हर क्षण हो,
धोखा देना जिसका प्रण हो,
स्वार्थ का साथ निभाए हर दम,
बिना स्वार्थ ना बात करे।
क्या उससे फरियाद करें हम..
क्या उससे फरियाद करें।

मुख में राम बगल में छुरी,
ध्यान लगाए रहते पूरी।
जो इनका विश्वास करे,
धोखा खाना है मजबूरी।
जो तिकड़म में सदा फंसा हो,
स्वारथ में आकंठ धंसा हो।
बस परमारथ की बात करे,
हम उससे क्या फरियाद करें।

बिन पेंदी के लोटे जैसा,
किधर कब लुढ़के है वो ऐसा।
गिरगिट जैसे रंग बदलते,
जिनका नहीं भरोसा कोई।
कैसे इनपर विश्वास करें,
फिर क्या इनसे फरियाद करें।।



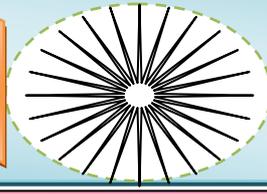
// मुझे मुस्कुराना पड़ा //

डा.टिकेश्वर सिन्हा

बहुत रोना आ रहा था मुझे,
पर
कनक कलेवर अल-सुबह को
हौले-हौले उनके हँसने पर
शब्रनम की रदनपंक्तियाँ देख
मुझे मुस्कुराना पड़ा।

बहुत रोना आ रहा था मुझे,
पर
मध्यदिवस शीतोष्ण अवधि को
शांत श्वेत सरोवर की गोद पर
बाल तरंगों की अठखेलियाँ देख
मुझे मुस्कुराना पड़ा।

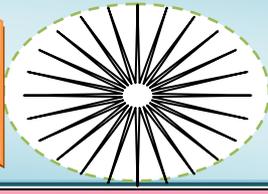
बहुत रोना आ रहा था मुझे,
पर
रजकण मिश्रित सिंदूरी शाम को
नीड़ लौटे परिन्दों के कलरव से
गूँजित हरित तरुडालियाँ देख
मुझे मुस्कुराना पड़ा।



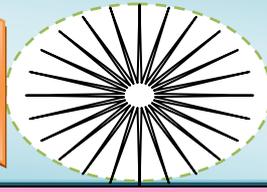
ज़िन्दगी ए बाजार

डा. कंचन जैन “स्वर्णा”

चल 'वक्त ए बाजार' लगा है,
चल कुछ 'वक्त' ढूँढते हैं।
कुछ तुम खरीदो,
कुछ हम खरीदते हैं।
देखेंगे नीयतें कितनी सस्ती बिकती हैं,
कुछ तुम खरीदो, कुछ हम खरीदते हैं।
बिक रही हैं,
इन्सानियत यूं ही बाजार में।
सज रही हैं,
जज़्बात ए स्याही निलामी के बाजार में।
चल,
कुछ मिल जाए तो, हम भी खरीद लेंते हैं।
कुछ उधार के सिक्कों सा,
“मन” भी जो बिक रहा हो।
बाजार में,
“सुकून” की जायदाद का हिस्सा कुछ हाथ में ले कर चल।
चल कुछ नहीं तो,
थोड़ी मुस्कान ही खरीद लेंगे,
हंसी तो बहुत महंगी है,
बाजार में,
थोड़ा मिल रहा हो, “यकीन” तो देख।
कीमत कितनी है।
कहीं गिर न रही हो,
तेरे हाथ से मासूमियत।
जरा संभालकर कर पकड़।
चल चलते हैं, “तलाश” में,



“ज़िन्दगी” की “बोली” की कीमत,
जो धीरे-धीरे निकल रही है,
हाथ से।
अपने आपको इकठ्ठा कर और चल,
बहुत बिखरा हुआ है, तेरा मन।
चल उठा और चल,
ज़िन्दगी ए बाजार लगा है,
इन्सानियत ढूँढते हैं।
कुछ तुम खरीदो,
कुछ हम खरीदते हैं।



बाल कहानी :

संगति का असर

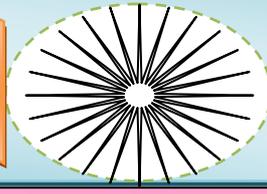
बहुत पुरानी बात है। बोरसी नामक एक घना जंगल था। वन की दक्षिण दिशा में किरवई नदी बहती थी। नदी की काली-कच्छार भूमि से लगी एक बहुत बड़ी खुली जगह थी। उस जगह का नाम टीला था। वहाँ कई तरह के पक्षी रहते थे। इनमें एक कौए का परिवार था। उसके बच्चों के साथ एक कोयल का भी बच्चा था। उसका नाम था पीहू। उसे सब पीहूरानी कहकर बुलाते थे।

उस पीहू कोयल को पता ही नहीं था कि उसके माता-पिता कौन हैं। आखिर उसका बचपन कौए के बच्चों के साथ बिता था। पर अब वह वयस्क हो चुकी थी। उसके माता-पिता कौए के घोंसले में अंडा देकर चले गये थे। कौए के बच्चों के साथ पीहू की परवरिश हुई थी। उसका खानपान, व्यवहार व रहन-सहन कौए जैसा था। यहाँ तक उसकी आवाज कर्कश हो गयी थी। अब तक वह अपनी जाति के पक्षी को देखा नहीं था। उसे तो अपनी ही आवाज अच्छी नहीं लगती थी।

अक्सर वह कौए के बच्चों से बतियाया करती थी कि उसे उसकी आवाज बिल्कुल भी पसंद नहीं है। बेसुरा लगता है। किसी से बात करने का तो मन ही नहीं करता। पीहू की आवाज काँव-काँव तो नहीं थी, पर कौए के बच्चों से मिलती जरूर थी। कभी-कभी वह गीत गाने का भी प्रयास करती थी, लेकिन कौए के बच्चों के साथ रहकर उसकी कोशिश रंग में भंग हो जाती थी।

एक दिन पीहू बहुत उदास थी। कौए के साथ रहने का उसका बिल्कुल मन नहीं कर रहा था। अचानक वह उड़ गयी वहाँ से। एक आम के बगीचे में जा पहुँची। फलों से लदे पेड़ देख कर उसका मन आनंदित हो उठा। प्रकृति के सौंदर्य को वह बार-बार निहारती रही। आम का बगीचा उसे स्वर्ग सा लगा। वह एक डाली से दूसरे डाली पर उड़-उड़ कर जाती थी, तो कभी पत्तियों में छिप जाती। ठंडी-ठंडी चलती पुरवाई उसे भा गयी।

इस तरह साँझ होने लगी। जब सूरज ढलने लगा तो उसकी लालिमा आम के फलों में पड़ने लगी। आम और भी खूबसूरत दिखने लगे। पीहू को वहाँ से जाने का बिल्कुल मन ही नहीं हुआ। संध्या होते ही बगीचे में रहने वाले पक्षी आने लगे। उन पक्षियों में पीहू को अपनी जाति के पक्षी भी दिखाई देने लगे। उन्हें देख पीहू घबरा गयी कि वे उसे भगा न दे। वह तुरन्त पेड़ की पत्तियों में छिप गयी। डालियों पर बैठी अन्य कोयल एक-दूसरे से जब बातें करती थी,

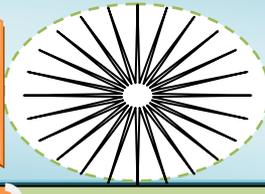


तो पीहू को बहुत ही अच्छा लगता था। उनकी आवाज में बड़ी मिठास थी। उसने स्वयं को और उन्हें देखने लगी। वे रंग-रूप में अपने जैसे लगे। पीहू सोच में पड़ गयी कि वह तो कौए का बच्चा है। भला इनके साथ कैसे रह सकती है। वहाँ से वह उड़ने ही वाली थी कि अन्य कोयल उसे देख लिये; और अपने पास बुलाकर पूछने लगे- “ अरी...! तुम कहाँ से आई हो। बहुत डरी हुई हो; और क्यों ? “ पीहू के मुँह से जरा सी भी आवाज नहीं निकल पा रही थी। उसे अपने आप में शर्म महसूस हो रही थी कि दोनों की आवाज में कितना फर्क है। अगर मैं इनके सामने कुछ बोलूँगी तो सभी मेरा मजाक उड़ाएँगे। अंततः ऐसा ही हुआ।

तभी एक कोयल पीहू से बोली- “ घबराओ मत। तुम कुछ तो बोलो। तुम तो हमारी जाति की हो। बोलो... बोलो....। “ पीहू जैसे ही कुछ बोलने की कोशिश कर रही थी बाकी कोयल और उनके बच्चे हँसने लगे, क्योंकि पीहू की आवाज कर्कश थी। उन्हें हँसते देख पीहू को रोना आ गया। तभी एक कोयल ने उसके आँसू पोछते हुए बोली- “ इसमें तुम्हारी कोई गलती नहीं है। गलती तो हमारी है कि हम अपने घोंसले नहीं बनाते। कौए के घोंसले में अंडे देते हैं। और तुम जैसे बच्चे हमारी इसी गलती की वजह से फँस जाते हैं। तुम्हारी आवाज का कर्कश होना; तुम्हारा वहाँ रहना ही है। “ पीहू सुबकते हुए बोली- “ अब मेरी आवाज आप लोगों की आवाज जैसी सुरीली व मीठी कैसे होगी। “ एक दूसरे कोयल ने कहा- “ चिंता न करो पीहूरानी। अब से तुम हम सबके साथ रहोगी। तुम रोज मीठे-रसीले आम व अन्य मौसमी फल खाओगी। नदी व झरने का मीठा जल पियोगी। और ठंडे छायेदार वृक्षों में रहोगी; साथ ही साथ रोज गीत गाने की कोशिश करेगी तो तुम्हारी आवाज सुरीली व मीठी हो जायेगी। फिर सब तुम्हें पसंद करेंगे। “

उस दिन से पीहू कोयल रोज रसीले आम का आनंद लेने लगी। गाने का भी अभ्यास करने लगी। धीरे-धीरे उसकी आवाज सुरीली होने लगी। आवाज मिठास आ आने लगी। पीहू खुश हो गयी। वह सबको रोज गीत गा-गाकर कर सुनाने लगी। इस तरह पीहू कोयल को अपनी स्वयं की आवाज मिल गयी।

प्रिया देवांगन



(दो भागों में समाप्य रूसी कहानी)

प्रथम भाग

चिंगारी, जिसने फूंक डाले घर

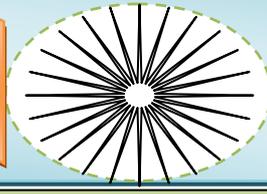
डा. घनश्याम बादल

बात काफी पुरानी है, रूस के एक गाँव में एक छोटा सा किसान था, नाम था इवान। इवान काफी सम्पन्न था, वजह थी, वह खुद तो मेहनती था ही उसकी पत्नी बहू, बेटी, बेटे सब मिलकर घर और खेत संभालते थे। अब एक मुँह को दो हाथ खिलाएं तो सम्पन्नता तो होगी ही। बस, घर का एकमात्र सदस्य ऐसा था जो कोई काम- - काज़ नहीं करता था, वह था इवान का सत्तर साल का बूढ़ा बाप। एक तो बुढ़ापा ऊपर से दमे का रोग, पिछले सात साल से बिस्तर पर ही था बूढ़ा। सब कुछ अच्छा ही रहता अगर

अगर इवान एक झगड़े में न फँस जाता, झगड़ा भी क्या बस यूँ ही खामखाह बात का बतंगड़ बन गया, बतंगड़ भी ऐसा कि एक जरा सी चिंगारी ज्वाला बन गई, ज्वाला भी ऐसी कि खान, गैब्रिल उनके परिवार और साथ में करीब करीब आधा गाँव ही स्वाहा हो गया।

हाँ, इवान का अपने पड़ोसी गैब्रिल के साथ एक मामूली सा झगड़ा ही इस सारे फ़साद की जड़ बन गया। वैसे इससे पहले दोनों ही परिवार अच्छे पड़ोसियों की तरह हंसी-खुशी से रह रहे थे। हुआ यूँ कि एक दिन इवान की पालतू मुर्गी दीवार पार कर गैब्रिल के घर चली गई, अब उसने वहाँ अंडा दिया या नहीं यह तो दीगर बात है पर अपने देवर टारस के कहने पर इवान की बहू गैब्रिल के घर चली गई पूछने कि उनकी, मुर्गी ने अंडा वहाँ तो नहीं दिया। गैब्रिल की घरवाली को यह बात बड़ी नागवार लगी कि उन पर कोई अण्डा चोर' होने का शक करे। सो सीधे-सच्चे मन से गई इवान की पुत्र वधू को उसने जो जवाब दिया वह बड़ा ही रुखा और कड़वा था। उस बूढ़ी औरत ने कहा, "हम तुम्हारी मुर्गी और अंडे की ताक में फिरते हैं क्या? हमारे पास रब की दुआ से भतेरे अण्डे और मुर्गियां हैं, और तुम्हारी तरह हम दूसरों के घर ताकाज़ांकी करते नहीं फिरते।" अब बेचारी बहू को काटो तो खून नहीं। वह भी चुप कहाँ रहने वाली थी, पलट कर उसने भी ईंट का जवाब पत्थर से दिया-- बस, फिर तो दोनों में ऐसी तू-तू, मैं- मैं छिड़ी कि पुरखे तक नहा गए।

बात यहीं नहीं रुकी, खान की घर वाली ने अपनी बहू का पक्ष लिया तो शैबिल की पत्नी अपनी सास की तरफ़दारी में आ डटी और देखते-देखते ही मामूली बात, तकरार में बदल गई। दोनों तरफ से दूसरे के खानदान तक को ज़बान के फीते से नापा जाने लगा।



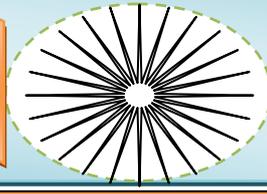
बात जुबानी तकरार से हाथापाई तक जा पहुँची। औरतों का झगड़ा था निपट जाता, पर खेत से लौटे गैब्रिल ने भी जब अपनी घरवाली की तरफदारी शुरू कर दी तो इवान को भी ताव आ गया। अब इवान था हट्टा कट्टा जाकर गैब्रिल की दाढ़ी ही नोंच ली, गैब्रिल से और कुछ तो करते नहीं बना, हाँ इवान को कमीज उसने जरूर फ़ाड़ डाली। खैर हल्ला - गुल्ला सुन अडोसी पड़ोसी आ गए जबरदस्ती दोनों को छुड़ाया। अब दोनो घर तो चले गए, पर दिल में बदले की चिंगारी रह गयी।

अपमानित गैब्रिल ने अपने दाढ़ी के उखड़े बाल समेटे और अदालत में जा, इवान के खिलाफ मुकदमा ठोक दिया। जले पर नमक यह कि उसकी घरवाली मौहल्ले भर में कहती घूमती रही कि इवान को जेल का पानी न पिलाया तो नाम नहीं, साइबेरिया की ठंड भुगतेंगा, तो नानी याद आएगी।"

अब इतना कुछ सुन, इवान भी कहाँ चुप बैठने वाला था, उसने भी दावा करने में देर नहीं की। इस सारे प्रकरण में यदि कोई मन से दुःखी था तो वह था इवान का बूढ़ा, बीमार बाप। पर लाचार बूढ़े की कोई सुने तब न ! बहुत समझाया इवान को, पर झगड़ा बढ़ता ही गया।

सात साल यूँ ही बीत गए दोनों ही परिवारों को फ़ाकाकशी की नौबत आ गई पर अहं न टूटा। बूढ़ा, जब तब समझाता रहता, अपने और गैब्रिल के बाप के बीच सम्बन्धों की दुहाई देता, अच्छाई-बुराई का फर्क समझाता, परिवार की बिगड़ती हालत का वास्ता देता, इवान सारी सुनता, पर झुकने को न वह तैयार था और न ही गैब्रिल। सो, मूँछों की लड़ाई जारी रही।

(जारी.....)



भाग 2:-

चिंगारी, जिसने फूंक डाले घर

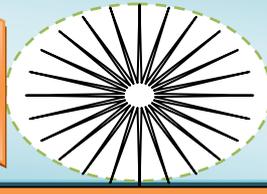
(अभी तक आपने पढ़ा : दान और गैबिल के परिवार एक मुर्गी के अंडे से शुरू हुई लड़ाई को सात साल तक घसीटते रहे दोनो ही परिवार फाकाकशी की हालत में पहुँच गए पर मूँछों की लड़ाई जारी रही।)

हालात यहाँ तक पहुँच गए कि अदालत में जज भी दोनो की शकल देखते देखते उकता गए। बूढ़े जज ने समझाया, 'देखो आपस में बातचीत से समझौता कर लो, यूँ तो तुम तबाह हो जाओगे।' पर आरोप प्रत्यारोप जारी रहे।

इस बीच आग में घी डालने वाली एक घटना और घट गई। एक समारोह में दोनों ही परिवार शरीक थे, इवान की पुत्रवधूने गैलि के सबके सामने ही 'अण्डाचोर 'कह डाला, गैबिल इस पर आपा खो बैठा और उसने महिला को दो चार घूँसे जड़ दियो हाय-तौबा मच गई, बदकिस्मती से महिला उस समय पेट से थी। बच्चा गिर गया और इवान को मौका मिल गया गैब्रिल पर गर्भवती महिलाको पीटने का मुकदमा ठोकने का। उसने कोर्ट के मुलाजिमों से साठ गांठ कर सख्त से सख्त धासएं लगवाई, उनके पेटभरे और आखिर कार गैब्रिल को सजा करवाने में कामयाब हो

गया। अदालत ने गैब्रिल को गर्भवती औरत को पीटने के जुर्म में पचास कोडे मारने की सजा सुनाई। शांत स्वभाव के जज ने फिर समझाने की कोशिश की, "देखो गैब्रिल, तुमने गर्भवती औरत पर हाथ उठाकर अच्छा नहीं किया, सोचो, कुछ हो जाता तो ? जाओ और जाकर इवान से माफ़ी मांग लो, अगर वह मान जाता है तो हम सजा रद्द कर देंगे।" गैब्रिल बोला, 'साहब मैं अगले साल पचास का हो जाऊंगा, आज तक किसी से नहीं पिटा और इवान की वजह से मैं मार खाऊंगा, और मैं ही जाकर उससे माफ़ी मांगूँ ? नहीं, हरगिज नहीं। वो तो मुझे याद रखेगा हमेशा, ऐसा करूंगा मैं।' कहकर अपमानित, गुस्से से उबलता गैब्रिल अदालत से बाहर चला गया।

शाम को इवान जब घर लौटा तो अंधेरा हो रहा था, घर सिर्फ • उसका बूढ़ा बाप था। 'इवान !' उसने आवाज पर दे कर कहा, "क्या हुआ, अदालत में आज।" "बीस कोड़ों की सजा मिली है उसे।" इवान ने अपनी खुशी को छिपाते हुए कहा। खासते खासते बूढ़ा बैठा गया। फिर इवान का हाथ अपने हाथ में लेकर बोला, " देखो



बेटे तुम लोग में ठीक नहीं कर रहे हो, आखिर गैब्रिल हमारा पड़ोसी है, हमारे पुराने सम्बंध हैं, लेन देन रहा है, सुख-दुःख सांझी रहे हैं। मेरी मानो, और जाकर गैब्रिल से समझौता कर लो ।

इवान तरेर खा गया, "अबू आपका दिमाग फिर गया है, उसने तो मेरी बहू को करीब - करीब मार ही डाला था, और आप कहते हैं नहीं हरगिज़ नहीं।" बूढ़ा शांत रहा, फिर बलगम थूक कर बोला, " गुस्सा, और नफरत थूक दो अगर वो ग़लत है, तो ग़लती पर तुम भी हो, बच्चों और औरतों को देखो रोज लड़ते हैं। वह ग़लत है तो उसे सज़ा खुदा देगा तुम क्यों अपने सिर बुराई लेते हो?, जाओ और उसे कल चाय पर बुला लाओ, नहीं तो यह छोटी सी चिंगारी, आग बनकर सब जला डालेगी - सब कुछ !"

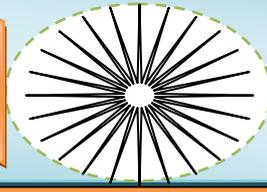
"हाँ, यही कहा था उसने अदालत में भी, उसका गुरूर टूटने दो..." कहकर इवान चलने लगा। बूढ़े ने फिर हाथ पकड़कर उसे बैठा लिगा और बोला, " देखो बेटे, उसके गुरूर को छोड़ो, अपनी ओर देखो, हमारे खेत, हमारी फसले, हमारे मवेशी पिछले- सात सालों में सब तबाह हो गए, सोचो ऐसा क्यों हुआ।" एक पल की चुप्पी के बाद फिर खुद ही बोला, " बेटे, ऐसा इस वजह से हुआ क्योंकि तुमने अपना सारा समय, इन दिनों अदालतों के चक्कर काटने में जाया किया, ऐसी ज़िद का क्या फायदा?, ज़िद छोड़ो और अच्छे पड़ोसी बनो.--" इवान ने सुना बात उसकी समझ में श्री आई अभी वह समझौते का मन बना ही रहा था कि घर की औरतें खेतों से नया झगड़ा करके लौटी और मंद पड़ती बदले की आग फिर भड़क उठी उधर बदले की आग में गैब्रिल भी सुलग रहा था। इधर अंधेरा बढ़ रहा था, और उधर गैब्रिल का अपमान से भड़का गुस्सा । आग दोनों तरफ थी।

इस बीच इवान पशुओं को चारा डालने मवेशीखाने की तरफ गया। गर्मी का महीना था, सब कुछ सूखा था। रास्ते में ही गैब्रिल का घर था, इवान ने गैब्रिल को किसी से कहते सुना, " अरे, वह तो मरने के लायक है।" इवान के मस्तिष्क में गैब्रिल की कड़वाहट भरी बात कौंध गई" उसकी ऐसा जलाऊंगा कि याद रखेगा, उसकी जलन की पीड़ा मेरी पीठ की जलन से कहीं ज़्यादा होगी।"

इवान अंदर तक कांप गया, गर्मी का सूखा, और गैब्रिल के शब्द ऐसे गडमड्ड हो गये कि 'जलन' में उसे 'आग' नज़र आई। अगर कहीं उसने फसल जला दी तो... शंका जोर पकड़ गई थी। अपने छोटे लड़के तारस को मवेशीखाने भेज इवान स्वयं भी खेतों की ओर लपक

लिया । 'शंका और बल पकड़ गई जब उसे लगा कि कोई चुपचाप उसके पुआलघर की चाहरदीवारी के पास जा रहा है, फिर उसने देखा, किसी ने मुट्ठी भर पुआल में आग लगाकर अंदर फेंक दिया है।

इवान उस साए की तरफ दौड़ा आग की चमक में उसने साफ देखा साया गैब्रिल ही था। इवान ने दबोचने की कोशिश की, पकड़ भी लिया पर तभी उस के सर पर कुछ लगा और वह बेहोश हो कर गिर गया।



आग ने जोर-पकड़ लिया, अंधेरी रात में भी दिन जैसी रोशनी हो रही थी। पर यह रोशनी तो अंधेरे से भी ज़्यादा भयावह थी, आग ने न अपना देखा न पराया, इवान का घर स्वाहा करती वह गैब्रिल के घर घुसी, चारा, सामान, कपड़े, मवेशी भस्माभूत करती वह आधे गांव में फैल गई। बूढ़े की बात सच हो गई थी। दोनो परिवार महज़ जो कपड़े पहने थे उन्ही में रह गए थे।

बूढ़ा बेचारा तो काफी जल भी गया था। खैर गाँव अच्छा था. सो सर छुपाने को छत और दो रोटी तो मिल गई। इधर बूढ़ा आखिरी सांस गिन रहा था, उसने इशारे से इवान को बुलाया, वह सर पीट पीट कर चिल्ला रहा था, " हाथ रे, ये मैंने किया, ये आग बुझाई जा सकती थी, मैं बुझा सकता था इसे, पर.... पर मेरी मति मारी जो गई थीं ---." लोग पकड़ कर उसे उसके पिता के पास लाए। वह सबको बताना चाह रहा था कि आग गैब्रिल ने ही लगाई। शायद नफरत की कोई चिंगारी बाकी थी, उसके मन में ।

अनुभवी बूढ़ा सब ताड़ गया, इवान को इशारे से चुप कर उसने अकेले में बात करने की इच्छा जताई। तखलिया (एकांत) होते ही बूढ़ा भावुक हो बोला, " मैंने क्या कहा था इवान, ये सारा गांव किसने जलाया ?" इवान जल्दी से बोला, " अब्बा मैंने खुद उसे...."

"बस इवान, अब बस भी करो, सोचो " पाप किसका है, भगवान को साक्षी कर कहो, चिंगारी को हवा किसने दी? सच बोलना, मेरी तरह एक दिन तुम्हे भी जान देनी है।"

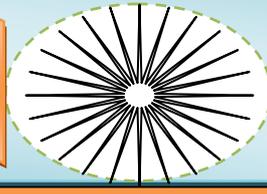
इवान समझ गया, अब्बू क्या कह रहे हैं फूट-फूट कर रो पड़ा इवान । शब्द आंसूओं से घुल निर्मल हो बाहर फूट पड़े, " हाँ, पाप मेरा है, मैं गुरुर में अंधा था, मेरी ही नफरत चिंगारी ने आग बढ़ाई, मैं आपके और खुदा के सामने शर्मिंदा हूँ, मुझे माफ कर दो अब्बू !"

बूढ़े ने उसे ढाँढस बंधाया और आखिरी सांसे गिनते हुए कहा, " बस, मेरी एक बात मानना इवान कभी भूलकर भी किसी को मत बताना आग किसने लगाई। बस, यही अखिरी शर रास्ता है, इस चिंगारी को खत्म करने का ।"

इवान ने वायदा किया और बूढ़ा चल बसा। इधर गैब्रिल को डर सता रहा था, गांव का डर, अदालत और सजा का डर, 'इससे भी ज्यादा अपने पाप के डर से वह अंदर ही अंदर जल रहा था, डर रहा था। सोच रहा था, इधर इवान ने मुँह खोला और उधर.....

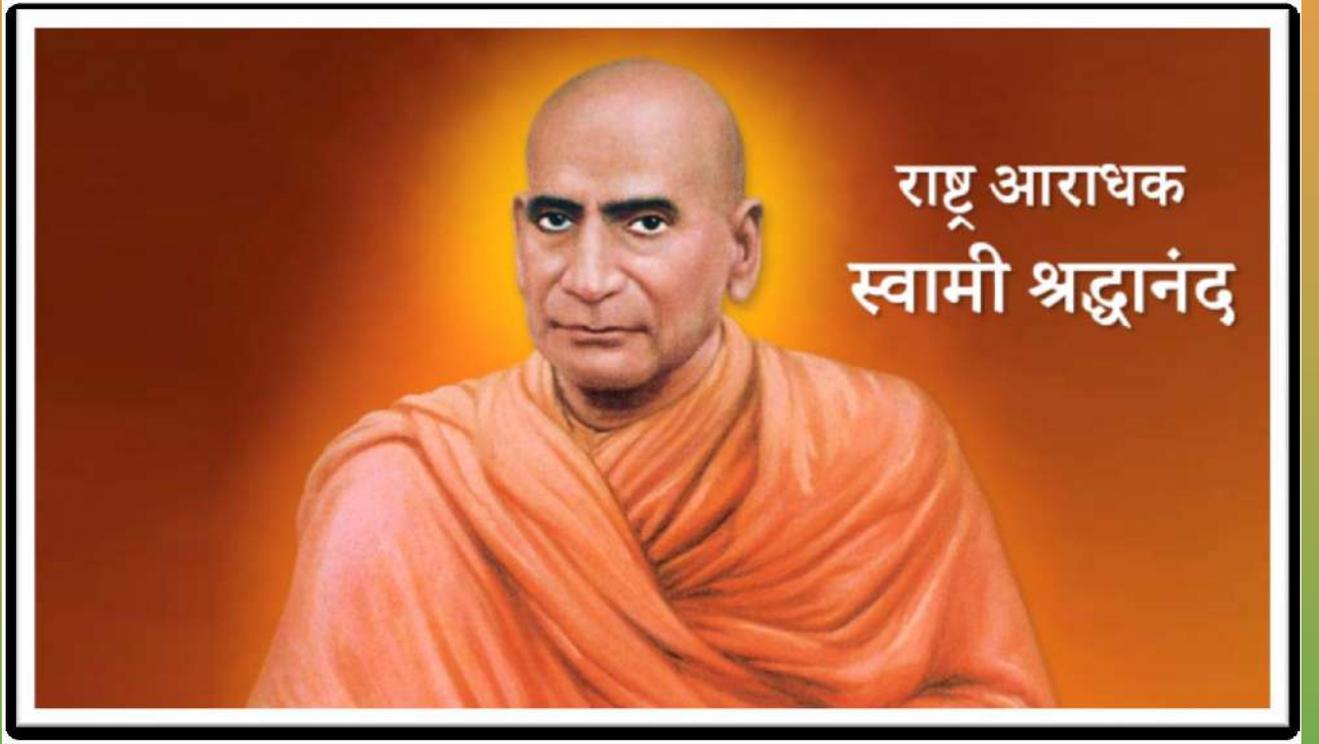
पर, इवान ने वायदा निभाया, वैसे भी उसके अंदर की गुरुर और नफरत की चिंगारी बुझ गई थी।

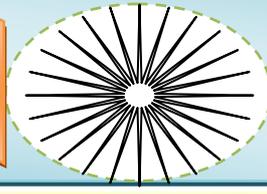
दिन, हफ्ते, महीने बीतते गए। माहौल सामान्य हो गया था, शायद इस आग में औरतों के तीखे शब्द बाण और मर्दों का गुरुर भी जल कर खाक हो गए थे। इवान और गैब्रिल के घर फिर बने, चाहते तो दूर-दूर बना सकते थे, पर फिर से उन्होंने घर बनाए तो अगल बगल में ही।



गैब्रिल का डर भी जा चुका था। अब, जब बड़ों ने ही लड़ना -झगड़ना छोड़ दिया था तो बच्चों को आपस में खेलने से भला कौन रोकता। हाँ एक बदलाव और था अब इवान जान गया था कि चिंगारी को पहले ही दबा देना बेहतर है।

(लियो टॉलस्टॉय की कहानी 'द' स्पार्क नेग्लेक्टेड बर्न्स द हाउस' का भावानुवाद)





बालकहानी :

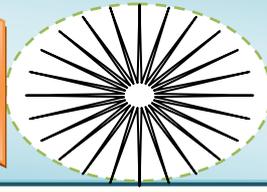
// नया अध्याय //

“माँ...! बाबूजी बाजार जाएँगे तो अंग्रेजी की पुस्तक और गणित के लिए एक मोटी काँपी ले आएँगे। बोल देना। मैंने अपना सवाल रफ काँपी में हल कर लिया है। शाम को स्कूल से आने के बाद गणित काँपी में फिर हल करूँगी। अभी मैं श्यामा के घर जा रही हूँ। उधर से ही स्कूल जाऊँगी।” कक्षा छठवी की सुमन अपनी माँ आशा को बताते हुए स्कूल के लिए घर से निकली।

“हाँ... ठीक है बिटिया ! बोल दूँगी तुम्हारे बाबूजी को। पर अभी स्कूल जल्दी जाओ। समय हो रहा है।” आशा किचन में व्यस्त थी; फिर भी खिड़की से झाँकते हुए बोली।

सुमन, श्यामा और श्रुति स्कूल जा रही थीं। तीनों सहेलियाँ अपने गृहकार्य सम्बंधित बातें बतिया रही थीं। चूँकि स्कूल गाँव से थोड़ा बाहर था। समय भी हो रहा था। इसलिए वे थोड़ी तेजी से चल रही थीं। सड़क की हालत भी खराब थी। सड़क के दोनों किनारे छोटे-छोटे गड्ढे हो गये थे। बारिश की वजह से गड्ढों में पानी भरे हुए थे। बस वे स्कूल पहुँचने ही वाले थे ; तभी तेजी से एक कार आयी। उसमें तीन-चार मनचले युवक बैठे थे। स्कूल जाती लड़कियों पर उनका ध्यान नहीं रहा। कार सर्र... से निकल गयी। कीचड़युक्त पानी लड़कियों पर छिटक गये। श्रुति और श्यामा के कपड़ों पर तो न के बराबर कीचड़ लगे। लेकिन सुमन के न सिर्फ सर व चेहरे पर कीचड़ लगे, बल्कि उसकी स्कूल युनीफॉर्म पूरी तरह खराब हो गयी। उसे कारवालों पर बहुत गुस्सा आया। युनीफॉर्म देख उसे रोना भी आ रहा था। श्यामा और श्रुति को भी अच्छा नहीं लगा। तीनों एकदम चुप हो गयीं। फिर सुमन की रोनीसूरत देख श्यामा बोली- “तेरी ड्रेस तो बिल्कुल खराब हो गयी सुमन। मत चल बहन स्कूल आज। पहले अपनी ड्रेस बदल कर आ जाओ घर से।”

“हाँ सुमन। श्यामा सही कह रही है। थोड़ी देर हो भी जाएगी, तो कोई बात नहीं।” श्रुति ने सुमन के चेहरे को रूमाल से साफ किया और उसके बैग को झाड़ने लगी। तभी श्यामा अपनी बैग से कागज के कुछ टुकड़े निकाल कर सुमन के बाल साफ करने लगी। श्रुति की ओर



इशारा करते हुए बोली- “यदि तुम चाहती हो तो हम दोनों यहीं पर घर से आते तक तुम्हारा इंतजार कर लेते हैं। लेकिन जाओ बहन घर। तुम्हारी ड्रेस खराब हो चुकी है।”

थोड़ी देर बाद सुमन सिसकते हुए बोली- “श्यामा ! मेरे पास तो एक ही स्कूल ड्रेस है। दूसरी युनीफॉर्म तो पंद्रह अगस्त तक सिलवा पाएँगे।”

“तो फिर आज मत चल स्कूल। हम लोग आरती मैडम जी को बता देंगे पूरी बात। जा घर। मत आना।” श्यामा ने सुमन के बैग को उसके पीठ पर लटकाया।

“आज जो भी होमवर्क मिलेगा; तुम्हें बता देंगे। ठीक रहेगा ?” श्रुति बोली।

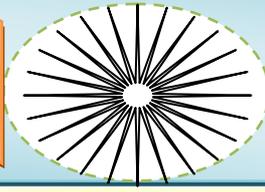
“नहीं श्यामा ! मैं स्कूल जाऊँगी श्रुति। स्कूल जाकर हाथ-पैर और चेहरा धो लूँगी। ड्रेस को पोंछ कर साफ कर लेती हूँ। कुछ टाइम के बाद ये सुख जाएँगे।” अपनी बैग सम्भालते हुए सुमन बोली।

“आज बस स्कूल नहीं जाओगी तो क्या बिगड़ जाएगा ?” श्यामा बोली। सुमन ने उन दोनों की बातों पर ध्यान नहीं दिया। वह घर वापस गयी ही नहीं। फिर तीनों बातें करते-करते स्कूल पहुँच गयीं।

प्रार्थना हो गयी थी। कक्षाएँ लग चुकी थी। सुमन, श्यामा और श्रुति सकपकाते हुए अपनी कक्षा की ओर बढ़ रही थीं; तभी उन पर प्रधानाध्यापक कुशल ठाकुर जी की नजर पड़ी। अपने पास बुलाये। देर से आने का कारण पूछा। तीनों लड़कियों ने ठाकुर जी को पूरी बात बतायी। फिर ठाकुर जी ने कक्षाध्यपिका आरती जी को बुलवाया। आरती जी को भी माजरा समझ आ गया। उन्होंने स्कूल में रखे अतिरिक्त स्कूल युनीफॉर्म्स में से एक युनीफॉर्म निकाल कर सुमन को दिया।

तत्पश्चात सुमन कक्षा में आकर श्यामा और श्रुति के पास बैठी। अध्यापन प्रारम्भ करने से पहले आरती जी ने कहा- “ड्रेस पर कीचड़ हो गया तो घर जाकर बदल कर आना था; या फिर आज स्कूल ही नहीं आना था। फिर सुमन बोली- “मैडम जी, मेरे पास एक ही स्कूल ड्रेस है। बाबूजी पंद्रह अगस्त के पहले खरीदेंगे।”

“ठीक है...” कहते आरती जी बोली- “आज मेरी बात ध्यान से सुनो। सड़क किनारे हमेशा बायीं तरफ ही अपने आगे-पीछे देख कर चला करो। चलते-चलते फिजूल की बातें मत किया करो। गाड़ी-मोटर की आवाज सुनते ही अपने साइड पर खड़े होकर उन्हें जाने दिया करो। ये बात सिर्फ सुमन के लिए ही नहीं है। ये सबके लिए है।” “जी मैडमजी...! कहते हुए बच्चे आरती जी की बातें बड़े से सुन रहे थे।” आरती जी ने अपनी बातें जारी रखी- “जैसे कि अभी बरसात का मौसम है, इसलिए पानी भरे गड्ढों पर विशेष ध्यान दिया करो। जैसे ही कोई

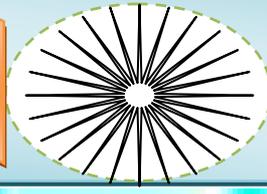


दुपहिया या चारपहिया गाड़ी दिखती है, तो तुरंत उनसे दूर होकर उन्हें पहले जाने दिया करो।
हाँ, सुमन तुम कुछ कहना चाहती हो ?”

“जी मैडमजी।” सुमन कहने लगी- “मैं अपनी स्कूल यूनिफॉर्म कीचड़ से सनने के बावजूद स्कूल
आयी क्योंकि आपने गृहकार्य पूरा करके आने के लिए कहा था। मैंने अपना गृहकार्य पूरा कर
लिया है। भूगोल के उन सभी प्रश्नों का उत्तर याद भी कर लिया है, जिन्हें आपने याद करके
आने के लिए कहा था। कंठस्थ कर लिया है मैंने मैडमजी। चाहे तो आप पूछ सकती हैं। आज
आप नया अध्याय “सौरमंडल” समझाने वाली भी हैं न। नया अध्याय को मैं समझना चाहती हूँ
मैडमजी। नया अध्याय न छुट जाए सोचकर वापस घर नहीं गयी; और मैं स्कूल आ गयी
मैडमजी।” पूरी कक्षा ने सुमन की अविरल बातें सुनी।

“यह तो बहुत अच्छी बात है। मानना पड़ेगा सुमन तुम्हें।” कक्षाध्यापिका आरती जी
ने मुस्कराते हुए सुमन की पीठ थपथपाई- “ अपनी पढ़ाई के प्रति सुमन का रुझान काबिले-
तारीफ है। यह सब पूरी कक्षा के लिए एक नई सीख है। सचमुच आज सुमन तुम सब के लिए
एक नया अध्याय है।” सुमन पर पूरी कक्षा की एकटक नजर थी।

टिकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'



गज़ल-1

खा के ठोकर गिरे भले

महेश शर्मा धार

खा के ठोकर गीरे भले गिरना

किसी की नजर में तू मत गिरना .

तुझे मिलेगा जो लिखा तेरे नसीबों में

किसी मजलूम का हक़ मत छीनना .

तेरा दामन भले हो तार तार कांटों में

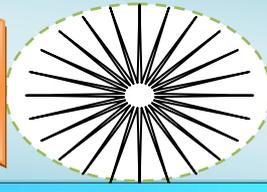
फिर भी तू एक गुलाब सा खिलाना .

हर कोई जी रहा तनहा तनहा

कितना मुश्किल है अपनों से घिरना .

एशो इशरत भी मिली शौहरत भी

फिर भी मुश्किल सुकून का मिलना .

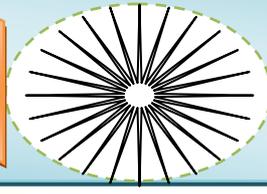


ग्रज़ल-2

दिल में भले तूफ़ान

महेश शर्मा धार

दिल में भले तूफ़ान ही रखना
चेहरे पर मुस्कान ही रखना१
हर कोई तेरा हो सकता है
शर्ते बस आसान ही रखना२
दिल की राहें चहरे से है
चहरे पर पहचान ही रखना३
रुकने वाले खो जाते हैं
अपना सफ़र गतिमान ही रखना४
खामोशी की कद्र ना होगी
अपने मुँह में जबान भी रखना५
जश्न मना ले चाहे जितना
यादों में शमशान भी रखना६
घूम ले चाहे पूरब पश्चिम
दिल में हिन्दुस्तान ही रखना ...७
दाना है वो दुःख पाते हैं
दिल दिमाग नादों ही रखना ...८
लहरों से अठखेली सरल है
नज़रों में तूफ़ान भी रखना९



गज़ल-3

महेश शर्मा धार

वो समझ कर भी

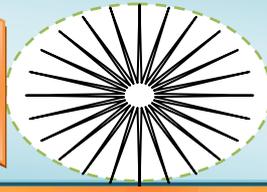
वो समझ कर भी मुझेको ना समझा
क्या पता जाने मुझेको क्या समझा |

खुली किताब सा मैं उसके आगे पेश हुआ
सफे पलटता रहा वो नहीं कुछ भी समझा |

मैं मुस्कराता रहा उसकी नासमझियों पर
वो था नादान मुझे अपने पर फ़िदा समझा |

कोई हीरा तो कोई धूल कोई पत्थर समझा
हरेक शख्स मुझे उसकी नजर से समझा |

किसी के वास्ते मैं प्यार का समंदर था
दिलजला कोई मुझे आग का दरिया समझा |



आलेख - भारत में क्रांति को नई दिशा देने वाले दो महान क्रांतिकारी योद्धा तिलक और आजाद

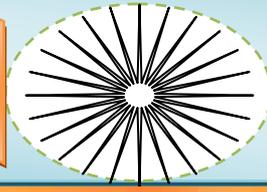
- डॉ उमेश प्रताप वत्स

भारत को हम एक प्राचीन समृद्ध देश मानते हैं। वेदों के अनुकूल चलने वाला एक श्रेष्ठ राष्ट्र जिसे अनेक महापुरुषों द्वारा देवभूमि , पुण्यभूमि व विश्व गुरु कहकर भी अलंकृत किया गया। भारत की यही समृद्धि विदेशी आक्रांताओं को अपनी ओर आकर्षित करने लगी।

भारत पर प्रथम विदेशी हमला 550 ईसा पूर्व ईरान के हखमनी वंश के राजाओं ने किया था। 516 ई.पू. में कम्बोज, पश्चिमी गांधार, सिंधु क्षेत्र पर विजय प्राप्त की थी। दारा प्रथम के तीन अभिलेखों बेहिस्तून, पर्सिपोलिस तथा नक्शे रुस्तम से यह सिद्ध होता है कि उसी ने सर्वप्रथम सिंधु नदी के तटवर्ती भारतीय भागों पर अधिकार किया था, जो की पारसी साम्राज्य का 20वां प्रांत बना। ईरानी आक्रमण के बाद मेसीडोनिया निवासी सिकन्दर का भी 326 ई.पू. में भारत पर आक्रमण हुआ।

उल्लेखनीय है कि संपूर्ण भारत पर कोई विदेशी पूर्णतः शासन नहीं कर पाया। हिन्दूकुश से लेकर अरुणाचल तक और कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक युधिष्ठिर और उसके पूर्ववर्ती राजाओं के अलावा राजा विक्रमादित्य, चंद्रगुप्त मौर्य और मिहिरकुल ने ही संपूर्ण भारत पर शासन किया था।

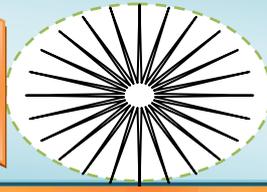
शक, हूण, कुषाण, अरब ,इरानी, तुर्की , गुलाम , खिलजी , तुगलक ,लोदी , मुगल ,अफगान आदि के अनेकों बार किये गये आक्रमणों से भारत का वैभव सिमटता जा रहा था। रही सही कसर ब्रिटिश इस्ट इंडिया कंपनी ने लूटेरी कंपनी के रूप में आकर पूरी कर दी जिसने न केवल भारत को आर्थिक रूप से कमजोर किया अपितु मानसिक व सांस्कृतिक रूप से भी अपाहिज करने का प्रयास किया।



1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में नानासाहिब ,तात्याटोपे , लक्ष्मीबाई , मंगल पांडे व कुँवर साहिब आदि ने क्रांति की लौ जलाई जो कि प्रज्ज्वलित होकर धधक भी रही थी। किंतु क्रांतिकारियों की अंग्रेजी हुकूमत पर एक साथ आक्रमण करने की योजना विफल होने पर यह प्रयास पूर्ण रूप से सफल नहीं हो पाये।

पूर्ण स्वराज की माँग पर एक बार फिर पूरे देश में बड़े स्तर पर किए क्रांति का ज्वार उठा। एक ओर गर्म दल के ध्वजवाहक लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने वैधानिक तरीके से अंग्रेजी हुकूमत को ललकारा तो दूसरी ओर क्रांति नायक शहीद शिरोमणि पंडित चन्द्रशेखर आजाद ने क्रांति की मशाल को ओर अधिक प्रज्ज्वलित कर ब्रिटिश राज की रीढ़ तोड़ने का कार्य किया।

बाल गंगाधर तिलक का जन्म महाराष्ट्र के कोंकण प्रदेश रत्नागिरि के चिक्कन गांव में 23 जुलाई 1856 को हुआ था। इनके पिता गंगाधर रामचंद्र तिलक एक धर्मनिष्ठ ब्राह्मण थे। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने ही सबसे पहले ब्रिटिश राज के दौरान पूर्ण स्वराज की माँग उठाई थीं। इसलिए उन्हें भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का जनक कहा जाता है। 'स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' ये नारा देने वाले भी भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के नायक बाल गंगाधर तिलक हैं। बाल गंगाधर तिलक सिर्फ एक लोकप्रिय नेता ही नहीं, बल्कि भारतीय इतिहास, संस्कृत, हिंदू धर्म, गणित और खगोल विज्ञान जैसे विषयों के विद्वान भी थे। वैसे तो उनका पूरा जीवन ही आदर्श है। भारत के स्वर्णिम इतिहास का प्रतीक है, लेकिन बाल गंगाधर तिलक के लोकमान्य बनने का सफर और कदम बहुत रीचक रहा। सन् 1879 में उन्होंने बी.ए. तथा कानून की परीक्षा उत्तीर्ण की। घरवाले यह आशा कर रहे थे कि तिलक वकालत कर धन कमाएंगे और वंश के गौरव को बढ़ाएंगे, परंतु तिलक ने प्रारंभ से ही जनता की सेवा का व्रत धारण कर लिया था। तिलक के क्रांतिकारी कदमों से अंग्रेज बौखला गए और उन पर राष्ट्रद्रोह का मुकदमा चलाकर छः साल के लिए 'देश निकाला' का दंड दिया और बर्मा की मांडले जेल भेज दिया गया। इस अवधि में तिलक ने गीता का अध्ययन किया और गीता रहस्य नामक भाष्य भी लिखा। तिलक के जेल से छूटने के बाद जब उनका गीता रहस्य प्रकाशित हुआ तो उसका प्रचार-प्रसार आंधी-तूफान की तरह बढ़ा और जनमानस उससे अत्यधिक आंदोलित हुआ। तिलक का स्वराज भी राजनीतिक स्वतंत्रता तक सीमित नहीं था। वह सांस्कृतिक एवं आर्थिक स्वतंत्रता की आवश्यकता के प्रति भी सचेत थे।

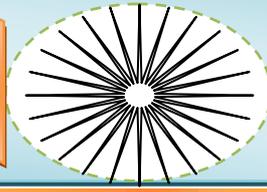


उनके द्वारा सार्वजनिक उत्सव- गणेश उत्सव और शिवाजी जयंती की शुरुआत की गई, जिसका उद्देश्य स्पष्ट रूप से सभी भोज का सांस्कृतिक मिलन करना था।

आज जब हम आत्मनिर्भर भारत की ओर बढ़ रहे हैं तो तिलक की विरासत को आगे बढ़ाने की बात करनी चाहिए। स्वदेशी विचारधारा को बढ़ावा देने के लिए आर्थिक राष्ट्रवाद की भावना को पुनर्जीवित करना और संस्कृति के माध्यम से सामाजिक एकता का प्रयास करना, तिलक की रणनीति की प्रमुख विशेषता थी।

इसी तरह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महानायक एवं लोकप्रिय स्वतंत्रता सेनानी चंद्रशेखर आजाद का जन्म भी 23 जुलाई, 1906 को मध्यप्रदेश के झाबुआ जिले के भाबरा नामक स्थान पर हुआ। आजाद का जन्मस्थान भाबरा अब 'आजादनगर' के रूप में जाना जाता है। उनके पिता का नाम पंडित सीताराम तिवारी एवं माता का नाम जगदानी देवी था। उनके पिता ईमानदार, स्वाभिमानी, साहसी और वचन के पक्के थे। यही गुण चंद्रशेखर को अपने पिता से विरासत में मिले थे। क्रांतिकारियों के नायक और अंग्रेजी हुकूमत को बार-बार चकमा देकर थकाने वाले पंडित चन्द्रशेखर आजाद पूर्ण स्वराज के लिए एक नई योजना पर आगे बढ़ रहे थे। भारत माँ की बेड़ियाँ चंद्रशेखर तिवारी को उद्वेलित करती थी और वे गांधी के असहयोग आंदोलन में पूरी आक्रामकता के साथ कूद पड़े किंतु, 1922 में महात्मा गांधी द्वारा मनमाने ढंग से असहयोग आंदोलन स्थगित करने से वे निराश हो गये। आजादी के लिए संघर्ष का संकल्प उन्हें रामप्रसाद बिस्मिल की हिंदुस्तान रिपब्लिकन एसोसियेशन में ले आया, वे उसके प्रमुख सदस्य बने। पृथ्वी पर चन्द्रशेखर आजाद जैसा योद्धा का अवतरण एक चमत्कारिक सत्य है, जिस कारण उन्नाव जिले का नाम विश्वभर में प्रसिद्ध हो गया।

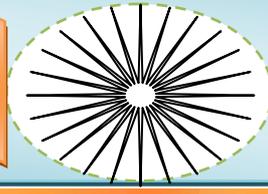
असहयोग आंदोलन से जागे देश में दमन-चक्र जारी था, युवा शेखर सत्याग्रहियों के बीच निकल पड़े, बेंत बरसाने वालों में से एक सिपाही के सिर में शेखर ने एक मोटा पत्थर मारकर उसे लहुलुहान कर दिया, पेशी होने के बाद जज के पूछने पर शेखर ने अपना नाम आजाद, पिता का नाम स्वतंत्र, काम आजादी के लिए संघर्ष व निवास जेलखाना बताया। गुस्साए अंग्रेज जज ने पंद्रह बेंतों की सख्त सजा सुनाई। बेंत खाते हुए लहुलुहान शेखर ने हर सांस में वंदेमातरम का जयघोष करते हुए युवाओं में देशप्रेम की शक्ति का संचार कर दिया। फिर अंग्रेजी हुकूमत जीवन भर आजाद के पावन शरीर को कभी छू तक नहीं पाई। चंद्र शेखर और जज के बीच सवाल-



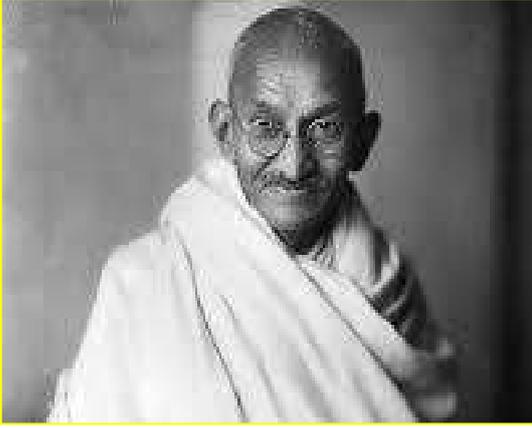
जवाब के चर्चे बड़े-बड़े क्रांतिकारी नेताओं की जिजासा को बढ़ा गये। सभी इस युवा क्रांतिवीर से मिलना चाहते थे। हिन्दुस्थान में क्रांति की जितनी योजनाएं बनीं सभी के सूत्रधार आजाद थे।

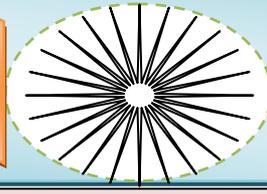
17 दिसंबर, 1928 को चंद्रशेखर आजाद, भगत सिंह और राजगुरु ने शाम के समय लाहौर में पुलिस अधीक्षक के दफ्तर को घेर लिया और ज्यों ही जे.पी. साण्डर्स अपने अंगरक्षक के साथ मोटर साइकिल पर बैठकर निकले तो राजगुरु ने पहली गोली दाग दी, जो साण्डर्स के माथे पर लग गई वह मोटरसाइकिल से नीचे गिर पड़ा। फिर भगत सिंह ने आगे बढ़कर 4-6 गोलियां दाग कर उसे बिल्कुल ठंडा कर दिया। जब साण्डर्स के अंगरक्षक ने उनका पीछा किया, तो चंद्रशेखर आजाद ने अपनी गोली से उसे भी समाप्त कर दिया। इतना ही नहीं लाहौर में जगह-जगह परचे चिपका दिए गए, जिन पर लिखा था- लाला लाजपतराय की मृत्यु का बदला ले लिया गया है। उनके इस कदम को समस्त भारत के क्रांतिकारियों ने खूब सराहा। 27 फरवरी 1931 की एक ऐतिहासिक सुबह प्रयागराज के आनंद भवन में जवाहर लाल नेहरू से मुलाकात के बाद चंद्रशेखर आजाद सीधे अल्फ्रेड पार्क चले गए। आजाद का संगठन एचएसआरए बिखर रहा था। भगत जेल में थे और उन्हें फांसी से बचाने की हर कोशिश नाकाम हो रही थी। वो आजाद जिन्हें 'बहुरूपिया' कहा जाता था। जिनकी सिर्फ तस्वीर हासिल करने में अंग्रेजों के पसीने छूट जाते थे, अपने ही साथी की गद्दारी को नहीं भांप सके। उनके पुराने साथी रहे वीरभद्र तिवारी ने उन्हें देख लिया और पुलिस अफसर शंभूनाथ तक खबर पहुंचा दी। पार्क में घिरने के बाद आजाद डटे रहे, लेकिन उन्हें 5 गोलियां लगीं और वे बुरी तरह घायल हो गए। अपनी प्यारी कोल्ट पिस्टल में बची आखिरी गोली से उन्होंने खुद को शहीद कर लिया, लेकिन अंग्रेजों के हाथ नहीं लगे। चंद्रशेखर आजाद ने संकल्प किया था कि वे न कभी पकड़े जाएंगे और न ब्रिटिश सरकार उन्हें फांसी दे सकेगी। इसी संकल्प को पूरा करने के लिए उन्होंने 27 फरवरी, 1931 को इसी पार्क में स्वयं को गोली मारकर मातृभूमि के लिए प्राणों की आहुति दे दी। आजाद अक्सर गुनगुनाते थे- 'दुश्मन की गोलियों का हम सामना करेंगे, आजाद हैं, आजाद ही मरेंगे।' यही सच भी हुआ।

अंग्रेज उनकी शहादत से इतना घबरा गए थे कि जिस जामुन के पेड़ के पीछे छिपकर उन्होंने 32 मिनट तक गोलियों का सामना किया, उसे भी कटवा दिया था। दरअसल आजाद की शहादत के बाद लोग इस पेड़ की पूजा करने लगे थे और यहां की मिट्टी का तिलक करने लगे थे। ऐसे वीर क्रांतिकारी चंद्रशेखर का नाम मन में आते ही अपनी मूर्खों को ताव देता वह नौजवान आंखों के सामने जाता है जिसे पूरी दुनिया 'आजाद' के नाम से जानती है।



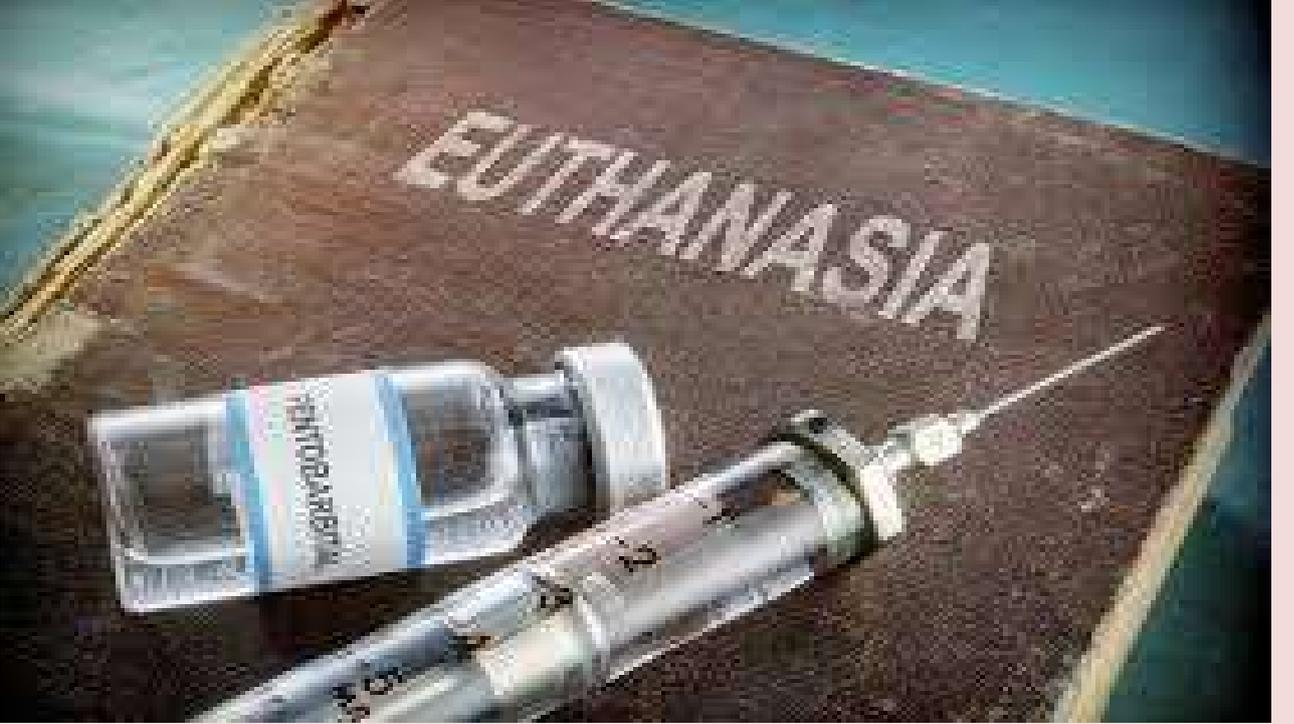
आज हमारे बच्चों एवं देश के हर विद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को यह ज्ञात होना चाहिए कि वे जिस खुली हवा में साँस ले रहे हैं , उसके लिए किन लोगों ने अपना सर्वस्व बलिदान दिया है और उन बलिदानियों के उन महापुरुषों के क्या सपने थे और वे आने वाली पीढ़ी से क्या अपेक्षा रखते थे ताकि हम उनकी अपेक्षाओं पर खरा उतरने का प्रयास करें।





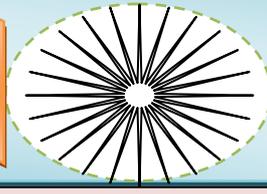
इच्छा मृत्यु या दया मृत्यु

कठिन है मरना
बिल्कुल जीने-सा कठिन
और रहस्य पूर्ण



मानव इतिहास में इच्छा मृत्यु की अवधारणा प्राचीनकाल से चली आ रही है | भारतीय शास्त्र व पुराण भी इस से अछूते नहीं हैं | भगवान श्री राम से भेंट होने और कुटिया से उनके प्रस्थान के पश्चात शबरी का स्वयं को योगमि (समाधिस्थ अवस्था में अपने शरीर को छोड़ देना) में भस्म कर लेना , इच्छा मृत्यु का ही एक रूप है |

इच्छा मृत्यु के वरदान स्वरूप ही महाभारत युद्ध के दौरान बाण शैय्या पर पड़े भीष्म पितामह ने सूर्य के उत्तरायण होने पर ही अपने प्राण त्यागे | वर्तमान समय में अत्यन्त गम्भीर बीमारियों अथवा असाध्य



कष्टों से मुक्ति पाने हेतु , इच्छा मृत्यु को वैध ठहराया जाए या नहीं यह एक बहस का मुद्दा बना हुआ है ।

सीता जी ने धरती की दरार में कूदकर अपनी जान दे दी थी, श्री राम और लक्ष्मण जी ने सरयू नदी में जलसमाधि ली थी, स्वामी विवेकानन्द ने स्वेच्छा से योगसमाधि की विधि से प्राण त्यागे थे। पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य ने भी अपनी मृत्यु की तारीख और समय कई वर्ष पूर्व तय कर ली थी ।

– आचार्य विनोबा भावे ने अपने अंतिम दिनों में इच्छा-मृत्यु का वरण किया , जब उन्होंने स्वयं पानी लेने तक का त्याग कर दिया था। इंदिरा गांधी उन्हें देखने के लिए गई थीं। तब वहां मौजूद पत्रकारों की यह मांग ठुकरा दी गई थी कि भावे जी को अस्पताल में दाखिला किया जाए ।

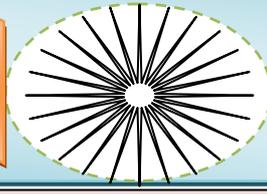
– जैन मुनियों और जैन धर्मावलंबियों में संथारा की प्रथा भी इच्छा मृत्यु का ही एक प्रकार है. जो बरसों से प्रचलित है.

इच्छा मृत्यु यूनानी शब्द यूथेनेसिया का हिन्दी पर्याय है जिसका अर्थ है- सुखद मृत्यु । यूथेनेसिया को मर्सी किलिंग अर्थात् दया मृत्यु भी कहा जाता है । व्यवहारिक रूप में यूथेनेसिया का अर्थ है-अपने जीवन को खत्म करने का अधिकार ।

इच्छा मृत्यु:-

- निष्क्रिय इच्छा मृत्यु
- सक्रिय इच्छा मृत्यु

निष्क्रिय इच्छा मृत्यु में असाध्य कष्ट झेल रहे व्यक्ति का इलाज रोक दिया जाता है । अथवा जीवन रक्षक प्रणालियाँ यथा वेंटिलेटर आदि की सुविधाएं हटा दी जाती हैं , जिससे रोगी की मृत्यु हो जाती है जबकि सक्रिय इच्छा मृत्यु में रोगी की पूर्ण सहमति के पश्चात चिकित्सक दवा देकर उसकी जीवन लीला समाप्त कर देते हैं । उल्लेखनीय है कि पूरे विश्व में कहीं कोई कानून नहीं है कि रोगी द्वारा मानसिक रूप से मृत्यु की स्वीकृति दिये बिना दवा का प्रयोग कर उसके जीवन पर हमेशा के लिये विराम लगाया जा सके ।



क्या कहता है भारतीय क़ानून -

भारत में इच्छा-मृत्यु और दया मृत्यु दोनों ही अवैधानिक कृत्य हैं। ये भारतीय दंड विधान (आई. पी.सी) की धारा 309 के अंतर्गत आत्महत्या का अपराध है। लेकिन अब सुप्रीम कोर्ट ने निष्क्रिय इच्छामृत्यु को अनुमति प्रदान की है।

भारत में कभी न ठीक होने वाले असहनीय कष्ट एवं अत्यंत गम्भीर बीमारियों से ग्रस्त व्यक्ति हेतु इच्छा मृत्यु का अधिकार दिये जाने की मांग वर्षों से की जा रही है। वर्ष 1996 में ज्ञान कौर बनाम पंजाब राज्य के मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने स्पष्ट किया कि संविधान के अनुच्छेद 21 के अन्तर्गत मानवीय गरिमा के साथ जीने का अधिकार सम्मिलित नहीं है।

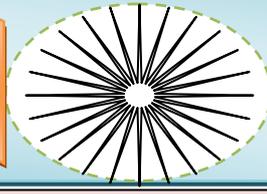
इसका उल्लंघन कर मृत्यु का वरण करने की कोशिश करने वाले को आई . पी . सी . की धारा 306 एवं 309 के अंतर्गत आत्महत्या के प्रयास का दोषी माना जायेगा। वर्ष 2011 में अरुणा शान बाग़ मामले से इच्छा मृत्यु के अधिकार की वैधता- अवैधता पर एक बार फिर से बहस तेज हो गई।

मुम्बई में एक अस्पताल में नर्स के रूप में कार्यरत अरुणा शान बाग़ के गले में जंजीर बांधकर उसी अस्पताल के वार्ड बॉय ने नवंबर 1973 में उसके साथ दुष्कर्म किया था। जिसके बाद से अब तक शान बाग़ मृत प्राय होकर अस्पताल में भर्ती है।

मुम्बई में एक अस्पताल में नर्स के रूप में कार्यरत अरुणा शान बाग़ के गले में जंजीर बांधकर उसी अस्पताल के वार्ड बॉय ने नवंबर 1973 में उसके साथ दुष्कर्म किया था। जिसके बाद से अब तक शान बाग़ मृत प्राय होकर अस्पताल में भर्ती है।

पीड़िता की लेखिका मित्र ने हमेशा कोमा में जीवन बिताने वाली शान बाग़हेतु सर्वोच्च न्यायालय में इच्छा मृत्यु की अर्जी दी थी। इस मामले में सर्वोच्च न्यायालय ने निष्क्रिय इच्छा मृत्यु के पक्ष में निर्णय सुनाया, किन्तु अस्पताल में शान बाग़ की सेवा करने वाली नर्सों ने इसका विरोध किया था, फलस्वरूप वह आज भी मरणासन्न होकर अस्पताल में पड़ी है।

वर्तमान समय में भारत सहित इंग्लैंड, नार्वे, फिलीपींस, इजरायल जैसे राष्ट्रों में इच्छा मृत्यु को कानूनन मान्यता नहीं दी गई है। इधर कुछ वर्षों के दौरान भारत में कुछ ऐसे मामले भी सामने आये हैं जिनमें आर्थिक तंगी के कारण उपचार न करा पाने वाले रोगियों अथवा उनके परिजनों द्वारा इच्छा मृत्यु की मांग की गई है। ऐसे में भारत जैसे विकासशील देश में इसे वैध ठहराने से इसके दुरुपयोग की सम्भावना से इन्कार नहीं किया जा सकता। वैसे भी भारत



में चिकित्सक को भगवान का दर्जा दिया गया है और उसे अन्तिम क्षण तक रोगी की जान बचाने के प्रयास करने की शिक्षा दी जाती है ।

इच्छा मृत्यु का वसीयत के साथ क्या संबंध है ?

सुप्रीम कोर्ट में जो मामला चल रहा है, उसमें मरणासन्न व्यक्ति द्वारा इच्छा मृत्यु के लिए लिखी गई वसीयत (लिविंग विल) को मान्यता देने की मांग की गई है । 'लिविंग विल' एक लिखित दस्तावेज होता है , जिसमें कोई मरीज पहले से इच्छा जाहिर करता है कि मरणासन्न स्थिति में पहुंचने या रजामंदी नहीं दे पाने की स्थिति में पहुंचने पर उसे किस तरह का इलाज दिया जाए। सुप्रीम कोर्ट ने लिविंग विल को मंजूरी नहीं दी है ।

किन देशों में है इच्छा मृत्यु का प्रावधान -

अमेरिका – यहां सक्रिय इच्छा मृत्यु गैर-कानूनी है लेकिन ओरेगन, वॉशिंगटन और मोंटाना राज्यों में डॉक्टर की सलाह और उसकी मदद से मरने की इजाज़त है ।

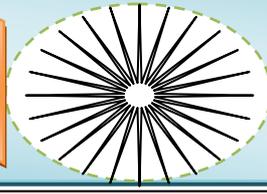
स्विट्ज़रलैंड – यहां खुद से ज़हरीली सुई लेकर आत्महत्या करने की इजाज़त है, हालांकि इच्छा मृत्यु गैर-कानूनी है ।

नीदरलैंड्स – यहां डॉक्टरों के हाथों सक्रिय इच्छा मृत्यु और मरीज की मर्ज़ी से दी जाने वाली मृत्यु पर दंडनीय अपराध नहीं है ।

बेल्जियम – यहां सितंबर 2002 से इच्छा मृत्यु वैधानिक हो चुकी है ।

विश्व में सर्वप्रथम वर्ष 1996 में ऑस्ट्रेलिया के उत्तरी राज्य में इच्छा मृत्यु का अधिकार प्रदान किया गया किन्तु अगले ही वर्ष , उस पर पुनः रोक लगा दी गयी । वर्ष 2014 में बेल्जियम ने अपने यहाँ असाध्य बीमारियों से ग्रस्त बच्चों के लिये इच्छा मृत्यु को वैध घोषित कर दिया जिससे इच्छा मृत्यु पर एक बार फिर से पूरे विश्व में चर्चा छिड़ गयी ।

सक्रिय इच्छा मृत्यु का अधिकार बेल्जियम की तरह जापान, मेक्सिको, नीदरलैंड एवं लग्जमबर्ग में भी प्रदान किया गया है । इन देशों में इच्छा मृत्यु के निर्णय तय करने हेतु विशेष आयोग को अधिकार प्रदान किये गये हैं ।



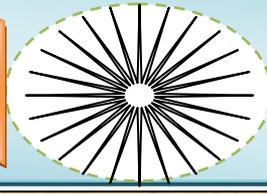
भारत के मामले

– बिहार पटना के निवासी तारकेश्वर सिन्हा ने 2005 में राज्यपाल को याचिका दी कि उनकी पत्नी कंचनदेवी वर्ष 2000 से बेहोश हैं. उन्हें दया मृत्यु देने की अनुमति दी जाए ।

– केरल हाईकोर्ट ने दिसम्बर 2001 में असाध्य रोग से पीड़ित बीके पिल्लई को इच्छा-मृत्यु की अनुमति नहीं दी, क्योंकि भारत में ऐसा कोई क़ानून नहीं है ।

– 2005 में काशीपुर उड़ीसा के निवासी मोहम्मद युनूस अंसारी ने राष्ट्रपति से अपील की थी कि उनके चार बच्चे असाध्य बीमारी से पीड़ित हैं । उनके इलाज के लिए पैसा नहीं है। लिहाज़ा उन्हें दया मृत्यु की इजाज़त दी जाए। । किंतु अपील नामंज़ूर कर दी गई। ।

इच्छा मृत्यु के वरदान से
मृत्यु तो न आएगी।
पर तीरों की पीड़ा
कम तो ना हो जाएगी।
पल-पल रिसता खून
एहसास दिलाएगा।
इच्छा मृत्यु है अभिशाप
जिसे कोई ना चाहेगा ॥



साक्षात्कार

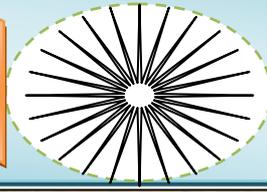
नमस्कार सर

हम स्वागत करते हैं आपका नई गूंज के साक्षात्कार के मंच पर सर आप के प्रयासों से शिक्षा के जगत में अद्भुत क्रांति आ गई है । केवल पढ़ना और क्या पढ़ना है , उसमें बहुत बड़ा अंतर होता है । आपने संजीवनी के माध्यम से समाज को इसी महत्वपूर्ण विषय पर जागरूकता प्रदान की है । आपके निरंतर प्रयासों , जो कि आप के द्वारा टी. वी., रेडियो, समाचार पत्रों व लेखों के माध्यम से किए गए हैं, को देख कर आपका शिक्षा व अपने समाज के प्रति अनन्य समर्पण भाव दिखाई देता है । हमें साक्षात्कार के इस मंच पर आपसे पाठकों की भेंट करवाने में अत्यंत प्रसन्नता है । एक बार फिर से आपके प्रति हृदय से आभार एवं अभिनंदन •

संजीवनी

संजीवनी कैरियर गाइडेंस एंड काउंसलिंग करियर काउंसलिंग और व्यक्तिगत मार्गदर्शन के क्षेत्र में एक अग्रणी नाम है । यह विभिन्न क्षेत्रों प्रिंट/इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में कैरियर परामर्शदाताओं/शिक्षा परामर्शदाताओं मनोवैज्ञानिक/डॉक्टरों/दार्शनिक और कैरियर संचार लेखकों की टीम है ।





आप कैसे जान सकते हैं कि आपके लिए सबसे अच्छा कैरियर कौन सा होगा ? केवल और केवल अनुभवी कैरियर काउंसलर ही आपके लिए सर्वश्रेष्ठ कैरियर का सुझाव दे सकते हैं।

छात्रों को जीवन में बिल्कुल उपयुक्त कैरियर खोजने में सक्षम बनाना , छात्रों को सही शिक्षा और कैरियर मार्गदर्शन प्रदान करके जीवन में बदलाव लाना संजीवनी का लक्ष्य है, आज हम आपकी भेंट करवाने जा रहे हैं डॉक्टर प्रदीप कुमार से जो कि अच्छे प्रेरक हैं और सहानुभूतिपूर्ण सलाह देते हैं । पेशे से चिकित्सक होते हुए भी देश भर के लाखों नवयुवकों को जीवन में कैरियर परामर्श देकर उनका जीवन सफल कर रहे हैं

डॉक्टर कुमार



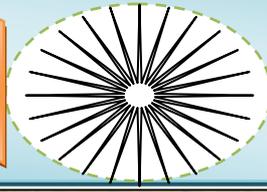
20 सालों का गहन अनुभव,
एम.बी.बी.एस , पी .जी ,
ई.पी.जी.डी.एच.ए. अस्पताल प्रबंधन
टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंस मुंबई से
बी.जे.एम.सी. ,
यू.सी.एल.ए. सर्टिफिकेट कैरियर एंड लाइफ
लॉन्च लाइफ कोच
एन.एल.पी . ट्रेनररेकी एनर्जी ग्रैंड मास्टर
Writer of more than 20 books
डॉक्टर प्रदीप कुमार , 8 वीं क्लास से लेकर
पोस्ट ग्रेजुएट स्टूडेंट्स को एक बहुत ही

accurate scientific test advanced DMIT test के माध्यम से कैरियर एंड लाइफ की दिशा निर्धारित करते हैं !

आप कैरियर के साथ-साथ लाइफ एवं रिलेशनशिप में आ रही समस्याओं को भी बखूबी परामर्श देते हैं । आपके भारत भर में लगभग 100 केंद्र हैं , जिनका मुख्यालय जयपुर है ।

आपने विगत सालों में टी. वी., रेडियो, प्रदेश के सारे न्यूजपेपर्स में कैरियर एंड लाइफ को लंबे समय तक कवर किया है ।

डॉ. कुमार भारत में एक प्रसिद्ध और सम्मानित करियर काउंसलर/लाइफ कोच/हैप्पीनेस कोच/ मेंटर /शिक्षक/मनोवैज्ञानिक/लेखक/दार्शनिक और करियर स्तंभकार हैं। सभी प्रकार की काउंसलिंग उनका जुनून है। अब तक आपने 80,000 से अधिक काउंसलिंग (कैरियर/मनोवैज्ञानिक/पारिवारिक/व्यक्तिगत) की हैं।



पूरे भारत में डॉ. कुमार संजीवनी ऑनलाइन/ऑफलाइन वीडियो परामर्श प्रदान करते हैं। वे व्यावहारिक दृष्टि से आपके कैरियर की पूरी योजना बनाते हैं। आपके हजारों कैरियर सेवा लेख राष्ट्रीय समाचार पत्रों में प्रकाशित हुए हैं। विभिन्न कैरियर साक्षात्कार टीवी और ऑल इंडिया रेडियो पर प्रसारित हुए हैं।

विभिन्न कैरियर पुस्तकों के लेखक

वह द इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ होलिस्टिक माइंड्स से मार्कस लेंग (मलेशिया) द्वारा प्रमाणित डर्मटोग्लिफ़िक्स विशेषज्ञ हैं। आपने मेडिसिन में पोस्ट ग्रेजुएशन और ग्रेजुएशन किया। आपने टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज, मुंबई से पत्रकारिता/परामर्श/मनोविज्ञान में स्नातक और एमबीए किया है। डॉ. कुमार व्यक्ति के समग्र उपचारक/जीवन प्रशिक्षक हैं। वह जीवन की किसी भी समस्या का रेकी और आध्यात्मिक/मनोविज्ञान उपचारक हैं।

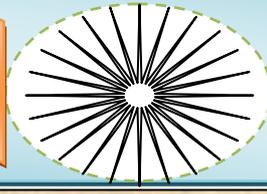
वह 18 वर्षों से अधिक समय से नेशनल मीडिया दैनिक भास्कर समूह के साथ मिलकर कैरियर काउंसलर के रूप में काम कर रहे हैं। आई.ए.एस टेस्ट सीरीज 2017 राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी दैनिक भास्कर में प्रतिदिन चलती थी।

आप की अखिल भारतीय भास्कर परीक्षा टेस्ट श्रृंखला दिव्य भास्कर, गुजरात, महाराष्ट्र और पूरे भारत में हिंदी क्षेत्रों में प्रकाशित हुई है। आप ने हाल ही में राजस्थान में जी मरुधरा टीवी चैनल पर लाइव करियर टॉक प्रस्तुत की। आपने डी . डी राजस्थानी टीवी चैनल पर सिविल सर्विसेज (आई.ए.एस/आर.ए.एस) के लिए बेहतर रणनीति कैसे बना सकते हैं, इस पर करियर यूथ वार्ता कार्यक्रम का आयोजन किया।

आप ने ई टी. वी राजस्थानी चैनल पर सिविल सेवा परिणाम पर लाइव इंटरव्यू प्रसारित किया था। आप ने राजस्थान में भास्कर टीवी पर विभिन्न करियर मुद्दों जैसे सिविल सेवा, बैंक परीक्षा और इंजीनियरिंग परीक्षा आदि पर कैरियर टॉक कार्यक्रम प्रस्तुत किए हैं।

प्रश्न-उत्तर की उनकी नियमित श्रृंखला (रस बनिये भास्कर के साथ) 2003 में राजस्थान के हिंदी दैनिक भास्कर में प्रकाशित हुई। दैनिक भास्कर की प्रत्येक सोमवार की कैरियर पत्रिका (कैरियर मंत्र) में विभिन्न करियर पर उनका नियमित कैरियर लेख ऑल ओवर में प्रकाशित हुआ।

65 पेपरों के प्रश्न-उत्तरों की उनकी एक और नियमित श्रृंखला वर्ष 2007, 2010, 2012 और 2013 में राजस्थान में हिंदी दैनिक भास्कर में प्रकाशित हुई। इन विशाल आर.ए.एस./आई.ए.एस. परीक्षा परीक्षण श्रृंखला में, संबंधित विषय के प्रत्येक भाग को कवर किया है जैसे राजस्थान जीके, इतिहास, भूगोल, राजनीति, अर्थव्यवस्था, विज्ञान और संस्कृति आदि।



आप के नियमित कैरियर लेख दैनिक भास्कर समूह की कैरियर पत्रिका में प्रकाशित हुए और सिविल सेवा, 2008 के जनवरी अंक में कवर पेज लेख प्रकाशित हुआ।

आप के विभिन्न कैरियर लेख राजस्थान पत्रिका (जो राजस्थान के प्रमुख समाचार पत्रों में से एक है) और इसके अन्य राज्यों के संस्करणों जैसे कर्नाटक पत्रिका, अहमदाबाद पत्रिका, कलकत्ता पत्रिका (मेट्रो संस्करण) में प्रकाशित हुए।

सर, आपका परिचय दीजिए

मेरा नाम डॉक्टर कुमार है , मैं भारत में सीनियर कोच हूँ और कैरियर काउंसलर हूँ । मैं हर समस्या को दिल से समझकर आत्मा पर व्यावहारिक समाधान देने में सक्षम हूँ ।

सर अपने परिवार व शिक्षा के बारे में बताएं

मेरा 20 वर्ष का बेटा है मेरा, एन.एल.यू. हैदराबाद से लॉ कर रहा है , बेटी दसवीं में है मैं अध्यापक का बच्चा था । xii भरतपुर जिले के भरतपुर जिले के भुसावर कस्बे से की , राजस्थान पी.एम.टी. clear करके M.B.B.S. एस .एम.एस.मेडिकल कॉलेज से की , यू.पी.एस.सी .क्लियर किया परंतु शिक्षा के क्षेत्र में रुचि होने के कारण कैरियर काउंसलिंग को अपना पेशा बनाया ।

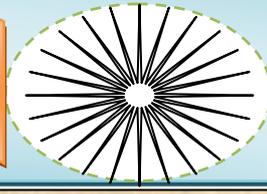
मैंने medicine मेडिसिन में पोस्ट ग्रेजुएशन किया और ग्रेजुएशन किया है । टाटा इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेज मुंबई से पत्रकारिता / परामर्श मनोविज्ञान में स्नातक और एम.बी.ए. किया है ।

एक व्यक्ति का समग्र उपचारक जीवन प्रशिक्षण करने में सक्षम हूँ ।

यह डिग्री एक जीवन की किसी भी समस्या का रेकी और आध्यात्मिक / मनोविज्ञान उपचारक है ।

एम. बी. ए. एच.ए.

सर, आपने किन-किन क्षेत्रों में सेवाएं व भागीदारी प्रदान की है इस पर कुछ प्रकाश डालें ।



मैं 18 वर्षों से अधिक समय में नेशनल मीडिया दैनिक भास्कर समूह के साथ मिलकर कैरियर काउंसलर के रूप में काम कर रहा हूँ ।

अभी हाल ही में मेरे द्वारा अखिल भारतीय भास्कर परीक्षा टेस्ट दिव्य भास्कर गुजरात ,महाराष्ट्र और पूरे भारत में हिंदी क्षेत्रों में बच्चों के लिए लांच की है , इसी के चलते बच्चों को प्रोत्साहन देने हेतु मरूधरा चैनल पर लाइव कैरियर टॉक भी की थी। राजस्थानी टी. वी., चैनल पर सिविल सर्विसेज आई.ए.एस. ,आर.ए.एस. के लिए कैसे बेहतर रणनीति तैयार करें , इस तथ्य को भी युवाओं को बताया था व बच्चों की मदद करने हेतु मैंने राजस्थान भास्कर टी.वी. पर विभिन्न कैरियर मुद्दों पर टॉक कार्यक्रम प्रस्तुत किए थे ।

इसी तरह रेडियो , अनेक पुस्तकों में गाइडेंस का जिक्र किया हुआ है , अनेकों कैरियर के लेख व श्रृंखला में बच्चों को गाइड देने हेतु लेख लिखे हुए हैं ।

सर आपके प्रेरणा स्रोत किन्हें मानते हैं आप, जिन्हें आप इस सफलता प्राप्त करने में सहायक मानते हैं ?

मेरे प्रेरणा स्रोत मेरी परिस्थितियां थी , यदि स्टूडेंट को सही समय पर proper guidance मिल जाए तो वह जीवन में अपने मुकाम में पहुंच सकता है , बिना गाइडेंस के वह इस अति व्यवसायिक मार्केटिंग प्रतियोगिता परीक्षा तंत्र में भटकता रहता है ।

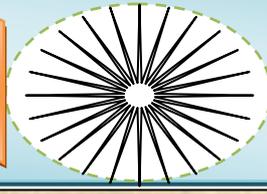
सर आज के युवा वर्ग का पुस्तकों व अच्छे साहित्य के प्रति रुझान कम होता जा रहा है, क्या इसका कोई समाधान हो सकता है ?

इसके कई समाधान हो सकते हैं जैसे

स्टूडेंट को प्रॉपर कैरियर काउंसलिंग लेकर ही साइंटिफिक तरीके से ही कैरियर का चुनाव करना चाहिए

1. डिजिटल साक्षरता को बढ़ावा दें ।

2.आकर्षक और प्रासंगिक सामग्री विकसित की जाए जो युवा पाठक को पसंद आए ।



3. पढ़ने वाले समुदायों को साहित्य पुस्तके पुस्तकालय में रखने को कहा जाए और प्रोत्साहित करें ।

4. पढ़ने में माता-पिता और शिक्षकों की शिक्षा भी शामिल करें ।

5. सफलता की कहानियां पढ़ें ।

कुल मिलाकर पढ़ने के मूल्य और महत्व को संरक्षित करने हेतु युवाओं की बदलती प्राथमिकताओं और आदतों को अपनाना आवश्यक है ।

आपकी दो वेबसाइट निम्न हैं

www.guidemytalent.com

and follow us on facebook

www.facebook.com/guidemytalent.

एक बार फिर से बहुत बहुत धन्यवाद सर, आपने अपना समय देकर हमें और समस्त पाठकों को कैरियर के बारे में सजग रहने की प्रेरणा प्रदान की है। आपके साक्षात्कार के माध्यम से समाज के प्रति अपने योगदान के महत्व को हर व्यक्ति समझ पाएगा, ऐसी ही हम कामना करते हैं।

संपादक

(नई गूंज)

डॉ . शिवा धमेजा

धन्यवाद

अगस्त अंक 2023 के लेखक परिचय

- डॉ. आर. बी. भंडारकर
dr.r.b.bhandarkar@gmail.com
पता :- सी -9, स्टार होम्स रोहितनगर फेस -2
भोपाल मध्य प्रदेश पिन :-462039
- डॉ घनश्याम बादल
215, पुष्परचना, गोविंद नगर
रुड़की
9412903681
Ghansyambadal54@gmail.com
- बृजेश कुमार
Aryabrijeshsahu24@gmail.com
9785837924
पता - जुरेहरा भरतपुर राज.
321023
- प्रिया देवांगन "प्रियू"
राजिम
जिला -गरियाबंद
छत्तीसगढ़

Priyadewangan1997@gmail.com

- डॉ उमेश प्रताप वत्स
14 शिवदयाल पुरी
निकट आईटीआई
यमुनानगर हरियाणा
पिन कोड - 135001
मोबाइल नंबर- 9416966424
Umeshpvats@gmail.com
- सर्वजीत सिंह
इब्राहिमपुर, माटीगांव चंदौली
पिन कोड -232120
9616585519
- डॉ शिवा धमेजा

Drshivadhameja01@gmail.Com
पता :- 140A गायत्री नगर जयपुर
9351904104
- टीकेश्वर सिन्हा 'गब्दीवाला'
घोटिया -बालोद (छत्तीसगढ़)
9753269282
Tikeshwarsinha221073@gmail.com

- सलिल सरोज
नई दिल्ली
salilmumtaz@gmail.com
- डॉ. कंचन जैन 'स्वर्णा'
अलीगढ़, उत्तर प्रदेश
8077212592
- महेश शर्मा
धार मध्यप्रदेश
9340198976

UDYAM-RJ-17-0210612

Goonj nayi @gmail.com

शोध, साहित्य एवं संस्कृति की उत्कृष्ट पत्रिका



नई गुँज
Design by -Rahul Deewan

Sign up at www.nayigoonj.com
9785837924